OM - 18 - 2019 BRAHMABABA DELHI FINAL_Page 1 and 2 26/11/2019 12:54 PM Page 1

ओमशान्ति मीडिया

18 जनवरी, विश्व शांति दिवस पर विशेष...

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष -21 अंक - 18 दिसम्बर-II-2019 (पाक्षिक) माउण्ट आबू Rs. 8.50

अद्भुत! अविश्वसनीय! अकल्पनीय!
अवर्णनीय! अनुभवी व्यक्तित्व की यात्रा

लेखराज की कर्म लेखनी से लेखनीबद्ध हुए प्रजापिता ब्रह्मा

इतिहास व्यक्ति के व्यक्तित्व का एक आइना होता है, लेकिन इतिहास रचने वाला हर पल, हर क्षण अपने आप को सम्भालता और संवारता रहता है, कि अगर एक भी मेरा कर्म ऐसा हुआ जिससे मेरे चरित्र पर दाग लगे, तो मेरा इतिहास जो हमारी आने वाली पीढ़ियां उसको पढ़ेंगी, तो उनके ऊपर इसका क्या प्रभाव पड़ेगा! ऐसा ही इतिहास जो अविस्मरणीय है, अकल्पनीय है, लिखा किसी ने। जिन्होंने एक साधारण मानव से सृष्टि के निर्माणकर्ता तक की यात्रा 33 वर्षों में सम्पूर्णता के साथ सम्पन्न की।

भक्ति रस के भाव वाले, मानवता के हितकारी, हीरों के पारखी, दादा लखी ने लिखा एक ऐसा संस्मरण, जो पूरी मानवता के सुख व समृद्धि के कई जन्मों का आधार बना। सृष्टि के प्रथम मानव की ऐसी उपाधि मिली, वो भी किससे, जो सृष्टि के नियन्ता परमात्मा हैं, ने उपाधिस्त रूप से नाम दिया प्रजापिता ब्रह्मा। ये वही ब्रह्मा हैं जिन्हें सृष्टि की रचना के लिए निमित्त समझा गया।

रचनाकार की प्रथम रचना ने कर्म की एक ऐसी राह पकड़ी, जिसकी कभी किसी से विस्मृति होगी नहीं। एक बार संकल्प किया, तो रच दी सृष्टि। उन्हीं की सविस्तार कहानी आपको अगले पन्नों पर उभरती हुई मिलेगी, जिन्होंने ऐसा कर्म किया जो पूरी मानवता उनके आगे नतमस्तक हो जाये।

सम्मेलन का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. निर्मला, राजयोगिनी ब्र.कु. योगिनी, राजयोगिनी ब्र.कु. गीता तथा अतिथिगण।

व्यापार में अध्यात्म को स्थान दें- सक्सेना

ज्ञानसरोवर-माउण्ट आबू। ब्रह्माकुमारीज़ के ज्ञानसरोवर स्थित हार्मनी हॉल में व्यापार और उद्योग सेवा प्रभाग द्वारा आयोजित सम्मेलन में एन.एम.आई. एम.एस. यूनिवर्सिटी के कुलपति डॉ. राजन सक्सेना ने कहा कि आध्यात्मिकता की शक्ति अविनाशी पूंजी है, जो कभी भी नष्ट नहीं होती है। आध्यात्मिक शक्ति की कमी ही सर्व समस्याओं का कारण है। राजयोग से अंतर्निहित शक्तियां जागृत होती हैं, जो किसी भी समस्या का समाधान करने का मार्ग खोलती हैं। महाराष्ट्र शासन हाउसिंग डिपार्टमेंट के उप सचिव रामचंद्र धनावड़े ने कहा कि ईमानदारी, अनुशासन, पारदर्शिता, सम्बंधों में समरसता श्रेष्ठ व्यापारी के आभूषण हैं, जिन्हें सदा साथ रखना चाहिए। ज्ञानसरोवर निदेशिका राजयोगिनी डॉ. निर्मला दीदी ने कहा कि स्थूल धन के साथ अविनाशी धन का होना भी ज़रूरी है। अविनाशी धन अर्थात् प्यार, सम्मान, सहयोग आदि देने से बढ़ता जाता है। जो अध्यात्म से ही प्राप्त होता है। व्यापार और उद्योग प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका एवं वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका ब्र.कु. योगिनी दीदी ने सभी प्रतिनिधियों को राजयोग का मर्म बताते हुए कहा कि मन-बुद्धि को परमात्मा पर टिकाना, आत्मा को परमात्मा के साथ जोड़ना ही राजयोग है। इस योग से हमारी मानसिक बीमारियां समाप्त हो जाती हैं और आंतरिक शक्तियों का विकास होता है। डायरेक्टर मिनिस्टर केयर ग्रुप, यू.के. से आईं अल्का बहन ने कहा कि हमें व्यापार वृद्धि करने के साथ स्वयं के आंतरिक विकास के बारे में सोचना चाहिए। जिसका अनुभव हम इस परिसर में कर सकते हैं। व्यापार और उद्योग प्रभाग की मुख्यालय संयोजिका ब्र.कु. गीता ने ज्ञानसरोवर के बारे में विस्तार से बताया। ब्र.कु. हरीश ने विचार रखे, ब्र.कु. लाल ने आभार प्रकट किया व मंच संचालन ब्र.कु. नम्रता ने किया।

ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा 'परमात्म शक्ति द्वारा व्यापार एवं उद्योग में समृद्धि' विषय पर अखिल भारतीय सम्मेलन

सशक्त किसान से बनेगा सशक्त राष्ट्र

ओ.आर.सी.-गुरूग्राम। ब्रह्माकुमारीज़ के ओम शांति रिट्रीट सेन्टर में आयोजित 'किसान सशक्तिकरण सम्मेलन' को सम्बोधित करते हुए पंचायत राज मंत्रालय, भारत सरकार के संयुक्त सचिव डॉ. संजीव पतजोशी ने कहा कि किसानों का कौशल विकास ज़रूरी है। किसानों की जागरुकता के लिए समय-समय पर उन्हें आधुनिक साधन उपलब्ध होने चाहिए। उन्होंने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ आध्यात्मिक विचारों से किसानों के मनोबल को बढ़ाने का सराहनीय कार्य कर रहा है। कृषि सहयोग एवं किसान कल्याण विभाग,कृषि मंत्रालय,भारत सरकार के अतिरिक्त सचिव बी. प्रधान ने कहा कि प्रकृति के साथ आत्मा का सुन्दर संवाद ही श्रेष्ठ जीवन का आधार है। हमारा श्रेष्ठ चिंतन ही प्रकृति को सुखदाई बनाता है। किसानों को प्रकृति के साथ संजीदा रहकर कार्य करना चाहिए। संस्था के अतिरिक्त महासचिव ब्र.कु. बृजमोहन ने कहा कि हम अपने दिव्यगुणों के द्वारा ही एक बेहतर समाज एवं विश्व का निर्माण कर सकते हैं। इस अवसर पर ओ.आर.सी. की निदेशिका ब्र.कु. आशा दीदी ने कहा कि प्रकृति भी हमारे मनोभावों को ग्रहण करती है। हमारे शुद्ध एवं सात्विक विचारों का प्रभाव प्रकृति को शक्तिशाली बनाता है। ग्राम विकास प्रभाग की अध्यक्षा ब्र.कु. सरला दीदी,मेहसाणा,गुजरात ने कहा कि सशक्त किसान से राष्ट्र भी सशक्त होगा, जिसके लिए आध्यात्मिक जागृति की महति आवश्यकता है। प्रभाग के उपाध्यक्ष ब्र.कु. राजू,माउण्ट आबू ने कहा कि राजयोग के ज्ञान एवं अभ्यास से ही हमारे अंदर समस्याओं का सामना करने की शक्ति उत्पन्न होती है।

ब्र.कु. राजेन्द्र,पलवल ने जैविक एवं यौगिक खेती के बारे में जानकारी दी। उन्होंने ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा की जा रही यौगिक खेती के बारे में भी बताया। कार्यक्रम का शुभारंभ दिल्ली, मजलिस पार्क से आईं ब्र.कु. राजकुमारी के स्वागत वक्तव्य द्वारा हुआ। अंत में दिल्ली से आए ब्र.कु. जयप्रकाश ने सभी का धन्यवाद किया। कार्यक्रम का संचालन ब्र.कु. प्रमिला ने किया। इस अवसर पर दिल्ली एवं एन.सी.आर. से अनेक लोगों ने शिरकत कर सम्मेलन का लाभ उठाया।

सम्बोधित करते हुए राजयोगी ब्र.कु. राजू। मंचासीन ब्र.कु. आशा दीदी, ब्र.कु. सरला दीदी तथा अन्य।

ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित किसान सशक्तिकरण सम्मेलन में पहुंचे कृषि जगत से जुड़े हज़ारों लोग

OM - 18 - 2019 BRAHMABABA DELHI FINAL_Page 1 and 2 26/11/2019 12:54 PM Page 2

नव सृष्टि के निर्माण के निमित्त प्रजापिता ब्रह्मा

- ब्र. कु. गंगाधर

जिस प्रकार घड़ी की घंटे, मिनट और सेकण्ड वाली तीनों सुईयां एक बार ज़रूर मिलती हैं। उसी तरह सृष्टि रूपी घड़ी में भी सभी मानवों का एक मिलन बिंदु, जिसको हम मिलन मेला भी कहते हैं। दुनिया में एक कहावत प्रसिद्ध है कि कभी तो हमारे सुख के दिन आयेंगे, कभी तो हमारा मन इच्छित फल मिलेगा, कभी तो जीवन उमंग-उत्साह से भरा हुआ होगा। अब ये वही घड़ी, वही समय है जिसमें हमें ये उपरोक्त सारी बातें मिलने वाली हैं। उसकी समझ या उसका ज्ञान न होने के कारण वो उसे मिल नहीं पाते। तो वो मिलन की घड़ी कौन सी है, इसके बारे में हम आपको बताते हैं।

हम वर्षों से यह गाते आये, 'त्वमेव माता च पिता त्वमेव...', पर वो कब पारलौकिक पिता हमें पिता और पुत्र के सम्बंध से मिलेगा और कैसे मिलेगा, इसका हमें ज्ञान नहीं था। इसलिए हम भटकते रहे, मंदिरों, मस्जिदों, गुरूद्वारों आदि-आदि में ढूंढ़ते रहे। कहते हैं, चारों तरफ लगाये फेरे, फिर भी हरदम उससे दूर रहे। क्योंकि जहाँ वो है, वहाँ तक पहुंचने का ज्ञान चक्षु ही नहीं था जो हम देख सकें, समझ सकें। वो तो ऐसे ही है, जैसे बचपन से ही पिता से विमुख या गुम हुए बच्चे की तरह। बच्चा अपने पिता को ढूंढ़ता रहा, लेकिन उसे अपने पिता की सही पहचान ही नहीं थी, जो वो उसे ढूंढ़ सके। पर ऐसे समय में वो घड़ी हमारे सामने आती है जब स्वयं परमात्मा अपना व अपनों का परिचय देते हैं। और कहते हैं, तुम मेरे प्यारे बच्चे हो, तुमने कई धर्म, पंथ, जाति, रंग आदि की दीवारें खड़ी कर रखी हैं जिससे तुम मुझे देख नहीं पाते। पर आप तो मेरे प्यारे बच्चे हो, इस देह और देह सहित सभी दीवारों से ऊपर उठकर मुझे देखो, मैं आपके ही साथ हूँ, मैं सृष्टि चक्र में इस समय आया हुआ हूँ आपसे मिलन मनाने।

ये मिलन चारों युगों के अंत अर्थात् कलियुग के अंतिम समय में मेरा आना होता और आकर आपको मन-इच्छित फल देकर आपकी सोई हुई तकदीर को संवारता हूँ। पर ये घटना इतनी आकस्मिक और आश्चर्यवत है जो इसे बड़े से बड़े विद्वान भी समझ नहीं सकते। मुझे कोटों में कोई ही जान सकता है, पहचान सकता है। पर जो जान और पहचान लेता है, उसकी सोई तकदीर जग जाती है। जिसको ही आत्मा और परमात्मा का मिलन कहते हैं। उस बेला को संगम की बेला कहते हैं अर्थात् आत्मा और परमात्मा के मिलन की बेला। तुम भिन्न-भिन्न दीवारों के मध्य अपने आप को ही भूल चुके थे, अपने अस्तित्व को ही पूर्ण रूप से खो चुके थे, इसलिए खुद की वास्तविकता से परे हो गए थे, इसलिए तुम मुझे देख नहीं सकते थे और ना ही हमारा मिलन हो सकता था। मैंने आपकी अपनी मनपसंद तकदीर बनाई थी और आपको इस सृष्टि पर भेजा था, जिसका आज भी यादगार है देवताओं के चित्र। मंदिर में जिसकी पूजा-अर्चना करते हैं वे आप ही थे। अब पुनः आपको वैसा ही बनाने के लिए इस धरा पर मैं आया हूँ। पर मैं हूँ निराकार और आप भी निराकार हो, तो मिलन करना और समझना रहस्यमयी भी है और कठिन भी। इसके लिए गीता में किये हुए वायदे अनुसार और शिव पुराण के मनुस्मृति में कहे अनुसार मैं एक वृद्ध तन में परकाया प्रवेश होता हूँ, उसके माध्यम से मैं आपसे मिलता हूँ। जिसका नाम मैं प्रजापिता ब्रह्मा रखता हूँ। उनके द्वारा आपसे प्यार करता हूँ, आपको पुनः अपनी पवित्रता से सराबोर करता हूँ और उन द्वारा साकार, श्रेष्ठ सृष्टि का निर्माण करता हूँ। तब तो कहते हैं ना कि ब्रह्मा के संकल्प से सृष्टि का सृजन हुआ। आप साधनों, प्रकृति के आकर्षण में पतित बन गये थे, उस आवरण को मैं पुनः साफ करता हूँ और फिर आपके उज्जवल भविष्य जो कि आपका देवताई स्वरूप है, उसका निर्माण करता हूँ। जिसको हम स्वर्ग कहते हैं, सतयुगी दुनिया कहते हैं। जहाँ न कहीं मतभेद है, न मनभेद है, न धर्म भेद है, न वर्ण भेद। वहाँ एकमत, एक भाषा, एक के और एक विश्व होता है, इसलिए द्वंद नहीं है। जहाँ द्वंद नहीं, वहाँ विकृति नहीं है। जहाँ विकृति नहीं, वहाँ पवित्र प्रवृत्ति है। जिसके कारण वहाँ सुख, शांति, समृद्धि और हर क्षेत्र में सम्पन्नता है और श्रेष्ठता भी है।

क्या हमें आज के माहौल में वैसा ही चारो ओर नहीं दिखाई देता! धर्म की ग्लानि, धर्म के नाम से लूट-खसूट दिखाई नहीं देती! यही वो समय है, जब जो अपने भीतर को, स्वयं को जान गया, समझ गया, तो वो इस भंवर से तर गया। हाँ, हम बात कर रहे हैं कि प्राणेश्वर, प्राण प्यारे, स्वयं निराकार का दर्शन इस सृष्टि चक्र में चल रहा है। हम आपको यह कहना चाहते हैं कि आप भी अपने प्राणेश्वर पिता से मिलन मना सकते हैं, उसके लिए वो शिक्षक बनकर सही ज्ञान और सही शिक्षा प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय को माध्यम बनाकर दे रहे हैं। पवित्रता का उच्चतम पद प्राप्त करने की विधि-विधान बता रहे हैं। तो आप भी ये पद पाना चाहते हैं ना! तो आप ज़रूर वहाँ जाकर अपनी सोई हुई तकदीर को जगा सकते हैं। जो जागा, वो जग जीता। जिन सोया तिन खोया।। 'अब पछतावत होत क्या, जब चिड़िया चुग गई खेत', कहीं हमारे जीवन में भी ऐसी घड़ी न आ जाये जो हमें भी स्वयं पर पछताना पड़े।

भारत के लिए स्वर्णिम काल चल रहा है, जहाँ स्वयं परमात्मा अवतरित होकर प्रजापिता ब्रह्मा के माध्यम से स्वर्णिम दुनिया बना रहे हैं। ये घड़ी कितनी सुहानी है, जहाँ जन्मों से बिछड़े हुए अलौकिक पिता-पुत्र का मिलन होता है। वाकई ही वो कितना सुंदर पल होगा! कौन नहीं चाहेगा कि इस पल को अपने जीवन में संजो लें!

प्रजापिता ब्रह्मा के जीवन में कर्तापन का भान कभी नहीं रहा

दादी जानकी,मुख्य प्रशासिका

मैंने देखा कि वे एक सच्चे पिता थे। उनसे सभी को पिता-पन का आभास होता था। हम उनके द्वारा ईश्वरीय ज्ञान सुनकर उत्पन्न हुए, इसलिए हम उनकी मुख सन्तान कहलाये। उनके अव्यक्त होने के बाद जो उनके बच्चे बने, उनके लिए बाबा प्रजापिता है और जो उन्हें अन्त में पहचानेंगे, वे उन्हें जगतपिता कहेंगे। हमें महसूस होता है कि थोड़े ही समय में समस्त विश्व उन्हें जगतपिता मानेगा अपने अनुभवों के आधार पर। मुझे उनसे बार-बार प्रेरणाएं मिली हैं कि जैसी भासना हमें बाबा ने दी वैसी ही भासना हम दूसरों को दें। जैसे बाबा ने हमें पालकर बड़ा किया, वैसे ही हम दूसरों को पालना देकर बड़ा करें। भले ही हम जगतपिता तो नहीं हैं, परंतु हैं तो उन्हें फॉलो करने वाले उनके ही महान बच्चे। दूसरी मुख्य बात मैंने बाबा में देखी कि बाबा में तनिक भी कर्तापन का भान नहीं था। बाबा सदा कहते थे कि सबकुछ शिव बाबा ही करता है या बच्चे करते हैं। अपने को सदा ही छुपाये रखना व बच्चों को स्वमान देना - यही मानवता हमने बाबा से सीखी। मुझे इस बात का सदा ख्याल रहता है कि कर्तापन का तनिक भी भान न आये।

हमें बाबा ने सिखाया कि शिव बाबा से ईमानदार कैसे रहना चाहिए। सम्पूर्ण सम्पत्ति का, चाहे वह उनकी स्वयं की थी या अन्य आत्माओं ने यज्ञ में दी थी, वे उसके सम्पूर्ण ट्रस्टी थे। यही विशेषता उन्होंने हमें सिखाई। इसी ईमानदारी से हमारा सारा व्यवहार सरल हो गया, हम भगवान के समीप आ गये और हमारी अधीनता भी समाप्त हो गई। मैंने ज्ञान मंथन करने की ये मुख्य विशेषता बाबा से सीखी कि शिवबाबा के ज्ञान पर मंथन कैसे करें ताकि अपनी बुद्धि का ज़रा भी अहंकार न रहे। यह बात बाबा में प्रत्यक्ष देखी। बाबा ने हमें सिखाया कि आपस में अलौकिक वातावरण कैसे होता है, अलौकिक भाषा कैसी होती है तथा अलौकिक सम्बन्ध कैसा होता है। जब भी बाबा के पास जाते तो ये तीनों बातें स्पष्ट देखने में आती थीं। बाबा के पास किसी भी तरह की लौकिकता नज़र नहीं आती थी। वास्तव में लौकिकता से दिव्यता मिस हो जाती है। बाबा ने हमें सिखाया कि हम संसार में कैसे, शिवबाबा से कैसे रहें, अपने से कैसे रहें, अपना स्वमान कैसे रखें। रूहानियत भी हो, नारायणी नशा भी हो। बाबा को सदा ही हमने पूरी अथॉरिटी में देखा। परिस्थितियों में बाबा कहते थे कि तुम डरो नहीं। सब बाबा के ही बच्चे हैं। इस प्रकार बाबा ने हमें अति निर्भय बना दिया।

न परिवार-न प्रतिष्ठा का ख्याल, परमात्मा को सर्व समर्पित 'प्रजापिता ब्रह्मा'

दादी हृदयमोहिनी, अति.मुख्य प्रशासिका

साक्षात्कार-मूर्त तब बनेंगे जब साक्षात् बाप समान बनेंगे। तो आप देखो, बाबा की सबसे पहली-पहली विशेषता क्या रही? ब्रह्मा बाबा को शिव बाबा ने टच किया और ब्रह्मा बाबा ने उस संकल्प में थोड़ा भी संशय नहीं लाया। क्या होगा, कैसे होगा, मैं सबकुछ छोड़ तो दूं लेकिन आगे स्थापना कर सकूंगा या नहीं कर सकूंगा! नयी बात थी ना। शुरु-शुरु में सिंध हैदराबाद में माताओं-बहनों के पवित्रता अपनाने के कारण बहुत विघ्न पड़े। बाबा को पंचायत में बुलाया गया। पंचों ने बाबा से कहा कि आप इन माताओं और कन्याओं से कहो कि पवित्र न रहें। हमारे आगे आप वायदा करो। बाबा ने कहा कि मैं यह वायदा नहीं कर सकता और इन्हें भी कह नहीं सकता क्योंकि शिव बाबा ने मुझे यही आज्ञा दी है कि तुमको पवित्र बनकर, पवित्र दुनिया की स्थापना करनी है। इस ईश्वरीय ज्ञान का फाउण्डेशन ही यही है और मैं कहूँ कि पवित्र नहीं बनो तो पवित्र दुनिया स्थापन होगी कैसे? मैं यह नहीं कह सकता हूँ। मुझे शिव बाबा का डायरेक्शन है, मैं उसे टाल नहीं सकता। ऐसा निश्चय है! इतनी हिम्मत चाहिए ना। बाबा को ज़रा भी संश्य नहीं आया। बाबा इतना बड़ा जौहरी था। जब सबकुछ यज्ञ में समर्पित कर दिया तो कभी सोचा कि मेरे परिवार का क्या होगा! मेरी प्रतिष्ठा का क्या होगा! मेरा इतना बड़ा परिवार है, सबकुछ समर्पण कर दिया तो वे भूखे तो नहीं मरेंगे! ऐसा कुछ भी नहीं सोचा। उनमें यही लगन थी कि बाबा जो कहता है मुझे वैसा ही करना है। इसको कहा जाता है निश्चय। आपके आगे एग्ज़ाम्पल है। आज इतना बड़ा पवित्र प्रवृत्ति वाला ब्राह्मण परिवार है। लेकिन उस समय ब्रह्मा बाबा अकेला था, उनके आगे कोई दृष्टांत, एग्ज़ाम्पल नहीं था। नयी बात थी। इतनी नयी बात कि लोग असम्भव मानते थे। उस असम्भव को बाबा ने सम्भव बनाकर दिखाया। संकल्प मात्र में भी, स्वप्न मात्र में भी बाबा को संशय नहीं आया। इसको कहते हैं बाप समान। बाप समान बनना माना साक्षात् बाबा बनना। तभी हम साक्षात्कारमूर्त बन सकते हैं। ब्रह्मा बाबा समान बनने के लिए पहला फाउण्डेशन है निश्चयबुद्धि। अपने आपसे पूछो, हम बाप समान निश्चयबुद्धि हैं? सिर्फ बाबा में निश्चय नहीं। बाबा से हमारा प्यार बहुत है। बाबा के लिए हम कुछ भी करने के लिए तैयार हैं। बाबा कुछ भी कहें, हम कर लेंगे। लेकिन बाबा कहते हैं कि कोई भी चीज़ अगर हिलती है तो आप चारो तरफ से बिल्कुल टाइट करेंगे ताकि हिले नहीं। हिलेगी नहीं तो टूटेगी नहीं। इसी रीति से बाप समान बनना है तो आपको भी चारो तरफ का निश्चय चाहिए। बाबा पर, स्वयं पर, ड्रामा पर और ब्राह्मण परिवार में निश्चय पक्का हो। निश्चय के आधार पर ही विजय माला का मणका बनेंगे।

साकार बाबा की अंतिम विदाई की वो अविस्मरणीय वेला

दादी प्रकाशमणि, पूर्व मुख्य प्रशासिका

बाबा के अव्यक्त दिवस अर्थात् 18 जनवरी, स्मृति पटल पर अमिट रूप से अंकित इस दिवस पर सवेरे से ही बाबा का स्वास्थ्य ठीक नहीं था। यज्ञ के इतिहास में और बाबा के तपस्वी जीवन में केवल यह एक ही समय था जबकि बाबा ने प्रातः की मुरली नहीं चलाई थी, परन्तु उस दिन सर्वोच्च स्थिति में, ईश्वरीय खुशी में स्थित थे। जब हमने डॉक्टर को बुलाने को कहा तो बाबा ने उसी मस्ती में कहा था -"बच्ची, डॉक्टर क्या करेगा, मैं तो सुप्रीम सर्जन से बातें कर रहा हूँ।" उसी दिन बाबा ने कहा - "आओ, आज बच्चों को पत्र लिखूँ।" और फिर बाबा के हाथ में थी वह लाल कलम, जिसके सुन्दर अक्षर सभी के दिलों को खींच लेते थे।

बाबा ने सभी पत्रों के उत्तर दिये। बाबा ने लिखा था, "बच्चे, सदा एकमत होकर, एक की याद में रहना है और सदा शक्तियों को आगे रखना है। तब ही सेवा में सफलता होगी।" ये अन्तिम पत्र कई बच्चों ने अपने दिल में छुपा कर रख लिए थे। कितनी सौभाग्यशाली थीं वे आत्माएं जिन्हें स्वयं सृष्टि रचता ब्रह्मा ने अपने हस्तों से पत्र लिखे थे। फिर शाम को जल्दी ही क्लास प्रारम्भ हुई। मैंने कहा, "बाबा, सभी इंतज़ार कर रहे होंगे, आज जल्दी ही आप क्लास में चलें। उस दिन बाबा 8:00 बजे ही क्लास में आये और साकार रूप में वो अन्तिम महावाक्य तो सम्पूर्ण गीता ज्ञान का सार है...दिल में समाने तुल्य है...बाबा ने कहा था -"बच्चे, सिमर-सिमर सुख पाओ, कलह-क्लेश मिटें सब तन के, जीवनमुक्ति पाओ।" "बच्चे, निन्दा हमारी जो करे, मित्र हमारा सोई" तुम्हें किसी की भी निन्दा नहीं करनी चाहिए और किसी से वैर-विरोध भी नहीं रखना।" इस प्रकार याद की यात्रा पर बल देते हुए यज्ञ पिता, बाबा खड़े होकर गेट की ओर चले और फिर गेट पर रुक गये...बोले, "बच्चे, निराकारी, निर्विकारी और निरहंकारी बनो। जैसे बेहद का बाप सम्पूर्ण व सदा निर्विकारी है, सदा निराकार है, निरहंकारी है वैसे ही बच्चों को भी बनना है।" और फिर उस अन्तिम घड़ी की पूर्व परछाई फेंकते हुए बाबा के मुख से ये शब्द निकले- "अच्छा बच्चे, विदाई।" ये शब्द बाबा ने केवल उसी ही रात बोले थे, जब बाबा साकार तन से बच्चों से सदा के लिए विदाई लेने जा रहे थे। नहीं तो बाबा सदा बच्चों को गुड नाइट ही कहा करते थे। मुरली सुनाने के बाद बाबा अपने कमरे में गये। हम चार बहनें भी बाबा के साथ गईं, तब बाबा के चेहरे पर सम्पूर्ण शान्ति व दिव्यता झलक रही थी। बाबा चारपाई पर नीचे पैर करके बैठे थे, तब उस अन्तिम घड़ी में, मेरा हाथ बाबा के हाथ में था। बाबा मुझे दृष्टि दे रहे थे।

दृष्टि देते ही बाबा शरीर से उड़ चला और मेरे हाथ में बाबा का हाथ ढ़ीला पड़ गया। मुझे ऐसा आभास हुआ था कि बाबा मुझे हाथ में हाथ देकर अपनी सम्पूर्ण शक्तियां व उत्तरदायित्व दे गये। हमारी समझ में कुछ नहीं आया। हमने बाबा को लिटा दिया, इतने में ही डॉक्टर आ गया और उसने चेक करके कहा कि बाबा अब नहीं रहे...परन्तु मुझे ये आभास नहीं हुआ था कि बाबा चला गया। मैं यही कह रही थी कि बाबा है...सबका प्यारा बाबा है...बाबा सदा साथ रहेगा। बाबा ने मुझमें अथाह शक्ति भर दी थी। मैं सब जगह फोन कर रही थी। मैं कहती थी -ड्रामा की भावी, ड्रामा याद है, बाबा अव्यक्त हो गये। जो भी आना चाहे भले पधारे। कोई भी आँसू न बहाये, बाबा तो अभी भी हमारे साथ है। बाबा ने हाथ में हाथ देकर मेरी हिम्मत बढ़ा दी थी। मैं अडोल थी। मुझे एक संकल्प मात्र भी नहीं आ रहा था कि "क्या हो गया!" या "अब क्या होगा!" मेरी दिल भी नहीं भरी, मेरे नयन भी नहीं भरे थे। मुझे पूर्ण विश्वास था कि हमारी पढ़ाई तो अन्त तक चलती रहेगी।

OM - 18 - 2019 BRAHMABABA DELHI FINAL_Page 1 and 2 26/11/2019 12:54 PM Page 3

एक अलौकिक यात्रा, लेखराज से आदि देव प्रजापिता ब्रह्मा

जिस प्रकार से चंदन को घिसने वाला अगर चंदन को छोड़ देता है तो भी उसके हाथ की खुशबू नहीं जाती, वैसे ही परमात्म शक्ति से ओत-प्रोत दादा लेखराज ने परमात्म सुगंध को चारों तरफ इस कदर फैलाया कि लोग उसकी भासना(प्यार) में खिंचे चले आये। परमात्मा शिव ने उन्हें युग निर्माणकर्ता की उपाधि दी और नाम रखा 'प्रजापिता ब्रह्मा'। ऐसा महापरिवर्तन जो एक साधारण मानव से एक दिव्य मानव की तरफ अग्रसर था, ने पूरी दुनिया को एक स्वर्णिम दुनिया में परिवर्तित करने का बीड़ा उठाया और आज पूरे विश्व की अनेकानेक आत्मायें उस परमात्म प्रेम की अनुभूतियों से पल्लवित एवं पुष्पित हैं।

हम प्रायः नहीं जानते कि हम क्या हैं? यह भी नहीं जानते कि हमारा 'होना' किस मतलब से है? आस-पास फैले चेतन और जड़ अस्तित्व के आपसी व्यवहार-व्यापार का रहस्य भी नहीं जानते हैं। पर कुछ लोग ऐसे हुए, जो इन सब रहस्यों से परिचित थे, इसलिए उनको अलौकिक पुरुष की उपाधि मिली। थे तो वो हमारी तरह ही, पर उनके बोल, व्यवहार और अनुभव हमसे भिन्न थे। इन उदाहरणों में अनेकानेक महापुरुष शामिल हैं। ऐसे अलौकिक पुरुषों में से एक तथा कई अर्थों में भिन्न हैं प्रजापिता ब्रह्मा बाबा। अलौकिक पुरुषों की जो भी कसौटियां हो सकती हैं, वे ब्रह्मा बाबा पर पूरी खरी उतरती हैं। उनका पूरा जीवन वृत्तांत दरअसल, परमात्म-सत्ता के निर्देशानुसार ही रहा। उनके साधारण व्यक्तित्व 'दादा लेखराज' से 'प्रजापिता ब्रह्मा' तक के महापरिवर्तन की जीवन गाथा यहाँ प्रस्तुत है...।

1876 में सिंध में वैष्णव कृपलानी परिवार में जन्मे दादा लेखराज बचपन से वृद्धावस्था तक एक साधारण ईश्वर भक्त के रूप में ही कार्य व्यवहार करते रहे। उनका व्यक्तित्व मधुर और आकर्षक था। इस कारण से उनका जवाहरात का व्यवसाय खूब फलीभूत था। उनके बहुत अच्छे और गहरे सम्बंध राजा-महाराजाओं से थे। उनका गृहस्थ जीवन बहुत ही सुखी व सम्पन्न था। वे अपने गुरू के प्रति पूरी तरह से समर्पित थे।

अलौकिक परिवर्तन

1936 के आस-पास, जब उनकी आयु साठ वर्ष की थी, उनमें अचानक एक अलौकिक परिवर्तन आया। और वो परिवर्तन इतना प्रभावशाली था कि उनका लौकिक कार्य व्यवहार से मन उचटने लगा। एकांत उनको भाने लगा। इसी प्रक्रिया में जब वो अपने मुम्बई के आवास में बैठे थे और उनके घर में सत्संग चल रहा था तो उनका मन एकाएक वहाँ से जाने को किया और वे उठकर अपने कमरे में चले गए। चूंकि दादा लेखराज इतने शिष्ट और सम्मानित व्यक्ति थे और गुरू के प्रति कितनी श्रद्धा थी, ये सब जानते थे। फिर उनके एक सम्बंधी के मन में संकल्प चला कि बाबा पहले तो कभी ऐसे बीच सत्संग से उठकर नहीं जाते थे, तो उन्होंने उनके पीछे-पीछे जाकर देखा तो उस कमरे में बाबा एकांत में बैठ गये और कमरा लाल प्रकाश से आलोकित था। और उसी समय दादा लेखराज को विष्णु चतुर्भुज का साक्षात्कार हुआ। दादा लेखराज जब उस साक्षात्कार से बाहर आये तो उनके अंदर कुछ प्रश्न थे और उन प्रश्नों का समाधान लेकर वे अपने गुरू के पास पहुंचे और घटनाक्रम का वर्णन किया।

साक्षात्कार से साक्षात को समझा

लेकिन उनके गुरू ने यह कहकर मना किया आज तक हमें तो ऐसा साक्षात्कार नहीं हुआ है, और इसके बारे में मुझे कुछ नहीं पता। इसके बाद कहा जाता है कि दादा लेखराज को ऐसे बहुत सारे साक्षात्कार होने शुरू हो गये जिसमें निराकार परमात्मा का, विश्व में हो रही घटनाओं का, महाविनाश का, स्वर्ग का आदि-आदि। लेकिन इसमें एक खासियत यह थी कि ये जो साक्षात्कार होता था वो अन्य बातों से बिल्कुल भिन्न था। उनको परमात्मा ने जो साक्षात्कार कराये वो दादा लेखराज को नया लगा, लेकिन उनके मन को भाया। ये उनका अनुभव भी था और ये सत्य भी। और ये सिलसिला दो-तीन वर्षों तक लगातार चलता रहा। ऐसे में जब उन्होंने स्वयं के बारे में समझा, साथ ही परमात्मा के विश्व परिवर्तन के कार्य और ये उनका ही निर्देशन है, ये भी यथार्थ रूप से समझा। तब इस कार्य के लिए परमात्मा ने उन्हें ईश्वराधिकृत कर नाम दिया 'प्रजापिता ब्रह्मा'। और कहा कि आपको इस सृष्टि को दैवी सृष्टि बनाने हेतु निमित्त बनना है।

दादा लेखराज को देखने भर से ही होते थे साक्षात्कार

अब ये कौन बताये कि दादा लेखराज के अंदर इतना बड़ा परिवर्तन आया और सच में वे बदल चुके हैं? तो इसका प्रमाण था उनके आस-पास के लोग, उनके सगे सम्बंधी। जिस दादा लेखराज को उन्होंने पहले देखा था, उनका चाल-चलन, व्यवहार पूरी तरह से बदल चुका था और उन्हें देखकर सभी को दिव्य साक्षात्कार होने लगे। इसके लिए सगे सम्बंधी ये भी बताने लगे कि जिस विश्वास के साथ दादा लेखराज बोलते हैं उससे उनको तनिक भी संदेह नहीं होता था कि यह ज्ञान सत्य नहीं है।

ब्रह्मा की भूमिका के लिए स्वयं को किया समर्पित

1936-37 में अपने इस अनुभव एवं बोध के बाद उन्होंने स्वयं को शिव परमात्मा प्रदत्त अपनी ब्रह्मा की भूमिका के लिए सौंप दिया। उनका यह ज्ञान-यज्ञ 'ओम मंडली' से प्रारंभ होकर 'प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय' में रूपांतरित हुआ और सतत् विस्तार पाता रहा। 18 जनवरी 1969 को उनके अव्यक्त होने के बाद भी आत्माओं को पवित्र एवं दिव्य गुणों से सम्पन्न बनाकर नव-विश्व का सृजन करने के लिए प्रारंभ हुआ यह यज्ञ अब भी जारी है और वे ही अब भी ज्ञान-यज्ञ के सूत्रधार हैं।

उनसे होती ईश्वरीय प्यार की खींच

वह देह, जिसमें परमात्म-सत्ता आई हो या उसे संस्कारित करके गई हो, चुम्बक की तरह अपने पास आने वाले लौह-कणों में स्फुरण पैदा किये बिना नहीं रहती। यह उसका एक तरह से नैसर्गिक गुण हो जाता है। हमने, आपने इतने अनुभव प्रसंग पढ़े-सुने या देखे हैं, उनमें ऐसा सदा ही हुआ कि

परमात्मा की लय में नाचा व्यक्ति अपने पास आये व्यक्ति में नाच पैदा नहीं करता, वह तो स्वतः हो जाता है। ऐसे बुद्ध पुरुषों के प्रभाक्षेत्र में प्रवेश करते ही आपको बदलाव महसूस होने लगता है। दादा लेखराज के पास जाते ही स्त्री, पुरुष तथा बालक उनकी दृष्टि पाते ही भावाविष्ट हो जाया करते थे। ऐसे अनेकों लोग अभी हैं जो यह बताते हैं कि उन्हें दादा के पास जाने पर भिन्न-भिन्न रूपों अथवा लोकों के साक्षात्कार हुए। उनसे मिलकर आया हुआ शायद ही कोई ऐसा हो, जो यह न कहे कि यह व्यक्ति तो अनूठा है। महसूस करने की इसी स्थिति को संभवतः रूहानियत या भागवत अनुभव कहा जाता है।

ईश्वराधिकृत निमित्त 'प्रजापिता ब्रह्मा'

दादा लेखराज न तो शास्त्रों के ज्ञाता थे, न तो भाषा के विद्वान। उन्होंने तो उस परमात्म-सत्ता को जाना भर था और परमसत्ता ने ही उन्हें युगनिर्माण के कार्य के लिए चुना। इस तरह से वे ईश्वराधिकृत निमित्त थे। इसलिए लोग उनसे जानने के लिए उनके पास जमा हो गये। उन्होंने भी अपनी साधारण बोलचाल की भाषा में ही उस ईश्वरीय ज्ञान को साधिकार बताया, जिसे बताने में सामान्यतः भाषा भी डगमगाने लगती है। इस रूप में महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि उनको परमात्म सत्ता ने अपने कार्य के लिए निमित्त बनाया था। इसी भूमिका के बारे में तो गीता का वचन है - 'यदा-यदा हि धर्मस्य, ग्लानिर्भवति भारत। अभ्युत्थानम् अधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।' रामचरित मानस में इसे इस तरह बताया गया - 'जब-जब होई धर्म की हानि, बाढ़हिं असुर अधम अभिमानी, तब-तब प्रभु धर विविध शरीरा, हरहिं कृपानिधि सज्जन पीरा।' इसी भूमिका के लिए निमित्त बने दादा लेखराज ने अपनी वाणी से अपने ज्ञान की गंगा में जिनको भी सराबोर किया वे फिर लौटकर नहीं गये। 1937 से प्रारंभ हुआ यह ज्ञान-यज्ञ कभी कमज़ोर नहीं पड़ा वरन् लगातार ज्ञान-पिपासुओं को

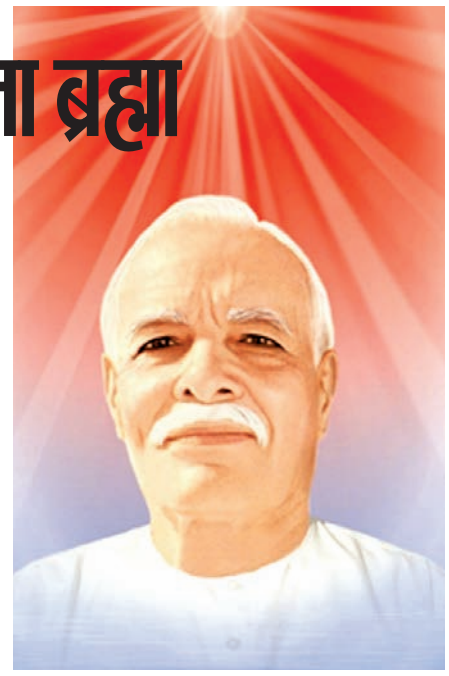

आकर्षित करता रहा है। यह भी एक बड़ी कसौटी है। जिस पर दादा लेखराज कई महापुरुषों में आगे खड़े दिखाई पड़ते हैं। दादा लेखराज ने जब सर्वप्रथम ज्ञानामृत पान किया था, तब अपने एक पत्र में अपने घरवालों को लिखा था - 'पा लिया वह सब, जो पाना था। अब कुछ बाकी नहीं रहा।' उनके इस ज्ञान से नहाये लोग भी अब यही कहते हैं - 'पा लिया जो पाना था, अब कुछ शेष नहीं।' यही सच्चे अनुभव की कसौटी है।

नैतिकता, मानवता, विश्वबन्धुत्व की प्रतिमूर्ति

भारत तो संतों की नगरी है ही, यहाँ पर बहुत सारे संतों ने परिवर्तन भी लाया। लेकिन एक प्रवृत्ति वाले ऐसे आध्यात्मिक मूल्य के प्रणेता दादा लेखराज, जिन्हें प्रजापिता ब्रह्मा के रूप में जाना गया, ने बहनों और माताओं या यूँ कहें की नारी शक्ति को, शक्तिशाली बनाकर समाज में उच्च स्थान दिलाकर, समाज से बुराइयों व विकारों से मुक्त करने का बीड़ा उठाया। यह कारनामा उन्होंने उस समय शुरु किया, जब उनकी उम्र 60 वर्ष की थी। उस समय उनके अन्दर एक परिवर्तन आया, परमात्मा के निर्देशन से, स्वपरिवर्तन से विश्व परिवर्तन की ओर बढ़े। जिसमें उन्होंने मूल्यों, मानवीय धारणाओं, विश्व बंधुत्व की भावना वाला एक नया विश्व लाने की ठानी, इस लक्ष्य को लेकर आगे बढ़ने वाले प्रजापिता ब्रह्मा, जो कि दूरांदेशी तथा एक बड़े सामाजिक सुधारक थे, उनमें मानवता के प्रति दया-करुणा भाव था, इसलिए उन्होंने इसके लिए 1937 में नारी शक्ति को उद्धारक के रूप में सामने लाया और प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की स्थापना की। जिसका आधार बनाया राजयोग को। मनुष्यों को पक्षपात व पूर्व मान्यताओं व धारणाओं से बाहर निकालने के लिए राजयोग मेडिटेशन बहुत ही मददगार साबित हुआ। आज इसी प्रयास का नतीजा है कि लाखों परिवार समाज में मूल्यनिष्ठ धारणाओं के साथ जीवन जी रहे हैं। इसी कार्य को देखते हुए कुछ अविस्मरणीय क्षण भी आए।

वो अविस्मरणीय क्षण

जिसमें भारत सरकार ने 7 मार्च 1994 के दिन भारतीय डाक टिकट, 'प्रजापिता ब्रह्मा' के नाम पर जारी किया। इस डाक टिकट की 1 मिलियन से भी अधिक प्रतियाँ छपी। यह उनका सम्मान था, जिन्होंने निःस्वार्थ भाव से मानवता तथा नारी उत्थान के लिए अपना जीवन समर्पण किया। उन्होंने सभी को समाज में जीने की नव प्रेरणा प्रदान की, उन्हें मानसिक रूप से शक्तिशाली बनाया तथा नैतिकता व विश्व बन्धुत्व द्वारा नई दुनिया लाने का लक्ष्य बनाया।

OM - 18 - 2019 BRAHMABABA DELHI FINAL_Page 1 and 2 26/11/2019 12:54 PM Page 4

आज विश्व के पाँचों महाद्वीप में सफेद वस्त्रधारी दिखाई पड़ते हैं। आठ दशक के पूर्व ऐसे वस्त्रधारी इस दुनिया में देखने में नहीं आये। लेकिन अब खासतौर पर भारत के हर शहर, गांव, कस्बे, जहाँ-तहाँ सफेद पोशाकधारी देखने में आते हैं, वे जैसे कि शांतिदूत की तरह इस जग में विचरण कर रहे हों! आपने देखा होगा कि वे नकारात्मक प्रवृत्तियों से मुक्त, अश्लील आचरण से परे और एक सकारात्मक ऊर्जा के साथ, मधुर व्यवहार को लिये हुए होते हैं। क्या कभी आपको यह ख्याल आया कि ये सफेद वस्त्रधारी कौन हैं? कभी सोचा आपने? नहीं ना! अच्छा, उन्हें जानते भी होंगे, तब भी पूर्णतः नहीं, वे कौन हैं, किससे ताल्लुक रखते हैं, उनके पूर्वज कौन हैं, इतनी गहराई तक तो आप गये ही नहीं होंगे ना! तो चलिए आज हम इनके बारे में जानें और समझें।

शास्त्रों में कही बात हो रही है अब प्रत्यक्ष

कौन हैं ये ब्रह्माकुमारियाँ ...!!

कैसे इनका जन्म हुआ

आज अगर विश्व के परिदृश्य पर नज़र डालें तो चारों तरफ अशांति और नकारात्मकता का माहौल है, ऐसा कहना कोई अतिश्योक्ति नहीं है। ऐसे माहौल के मध्य ये सफेद वस्त्रधारी जैसे कि शांति दूत की तरह नज़र आते हैं, ऐसा उनके होने से वायब्रेशन्स आते हैं। बात करीब आठ दशक पूर्व की है, भारत जब अंग्रेजों से स्वतंत्र होने के लिए जूझ रहा था, ऐसे में एक दिव्य, अलौकिक शक्ति का इस धरा पर आगमन हुआ और उसने अपने अवतरण के लिए एक वृद्ध मानवीय तन का आधार लिया, जिनका नाम दादा लेखराज था। और उनके मुखारविंद से ये आवाज़ आई 'निजानंद रूपं शिवोहम शिवोहम... ज्ञान स्वरूपं शिवोहम शिवोहम... प्रकाश स्वरूपं शिवोहम शिवोहम...' थोड़े वक्त तक ऐसा चलता रहा। उन्हें कुछ भी समझ नहीं आ रहा था कि ये हो क्या रहा है! फिर थोड़े दिनों के बाद उन्हें स्वर्णिम दुनिया का साक्षात्कार हुआ और एक आवाज़ आई कि आपको ऐसी दुनिया बनानी है। फिर दूसरी बार उन्हें वर्तमान दुनिया के महापरिवर्तन का साक्षात्कार हुआ। उसके बाद दादा लेखराज को ये बात पूर्णतः समझ में आई कि जगत नियंता इस सृष्टि को परिवर्तन करके भारत के आदि सनातन दैवी संस्कृति की पुनः स्थापना कराना चाहते हैं। जब उन्हें ये सम्पूर्ण निश्चय हुआ तो वे इस कार्य को सम्पन्न करने में जुट गये।

ओम मंडली से...प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय

निश्चय होने के पश्चात् स्वयं परमात्म शक्ति ने दादा लेखराज को नाम दिया, 'प्रजापिता ब्रह्मा'। प्रजापिता ब्रह्मा ने ईश्वरीय आदेशानुसार, जो इस विचार को समझ सके, उस समूह के द्वारा सत्संग आरंभ किया जिसे 'ओम् मंडली' के रूप में जाना जाने लगा, बाद में इसका नाम बदलकर 'प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय' हो गया। आज हम देखते हैं तो प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय सिर्फ भारत में ही नहीं, अपितु सारे विश्व में फैला हुआ है। इस थोड़े समय अंतराल में इतना व्यापक रूप आज हमें इस संस्थान का देखने को मिल रहा है।

जो करे परमात्म शिक्षा का अनुकरण वही है ब्रह्माकुमार-ब्रह्माकुमारी

परमात्मा की शिक्षा को प्रजापिता ब्रह्मा के मुखारविंद से जो सुनते हैं, अनुकरण करते हैं, धारण करते हैं, उन्हें ही ब्रह्माकुमारी या ब्रह्माकुमार कहते हैं। वे कोई गर्भ से जन्म नहीं लेते, किंतु ब्रह्मा के मुख कमल से जन्म लेकर 'ब्रह्मा-मुख वंशावली' कहलाते हैं। इन ब्रह्मा-मुख वंशावलियों का मुख्य उद्देश्य है परमात्मा के निर्देश को धारण करना और उनके संदेश को सारे विश्व में पहुंचाना। निरंतर परम कृपालु परमात्मा के निर्देशों को अपने जीवन में उतारना और अपने दिव्य व्यवहार के द्वारा जग में शांति, सौहार्द, समरसता और भाईचारे के वायब्रेशन्स को फैलाना। जिसको हम दूसरे शब्दों में कहें तो हमारे आदि सनातन देवी-देवता धर्म की संस्कृति की स्थापना करना है। इस तरह से भारत में पुनः दैवी साम्राज्य आयेगा।

ब्रह्मा की शिक्षा की प्रत्यक्षता ब्रह्मा वत्सों द्वारा

प्रजापिता ब्रह्मा एक नये युग के युग पुरुष के रूप में उभरते नज़र आते हैं। उनकी शिक्षाओं से सभी ब्रह्मा वत्सों में वो देवत्व दिखाई देता है जिसकी आज हम कल्पना मात्र करते हैं। हमने केवल सुना है कि भारत सोने की चिड़िया था, परंतु वो कब था, कैसे उसका आगमन हुआ, कैसे स्थापना हुई, इसे हम पूर्णतः नहीं समझ पाते।

शास्त्रों में कही गई बात हो रही है अब प्रत्यक्ष

ये भारत सोने की चिड़िया कब था, इस विषय पर यदि इतिहास के संदर्भ को देखें, यदि हमने शास्त्रों को पढ़ा है, तो एक बात सदा ही हमारे कानों में गूंजती है, "यदा यदा हि धर्मस्य, ग्लानिर्भवति भारत, अभ्युत्थानम् अधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्। परित्राणाय साधुनाम, विनाशाय च दुष्कृताम्, धर्म संस्थापनार्थाय सम्भवामी युगे युगे...।।" तो आज हम देखते हैं, चारों ओर अधर्म, अज्ञान अंधकार के वश मनुष्य विकृत कर्म में रमा हुआ है। चारों तरफ एक दूसरे को नीचा दिखाना, अपमान करना, अनादर करना, ये हम सब आज देख रहे हैं। तो क्या आपको यह नहीं लगता कि इस जंजाल से मुक्त करने के लिए परमात्मा के आने का यही सही समय है? और क्या यह समय हम पतित मनुष्यों को पावन बनाने का नहीं होना चाहिए? अगर शांत मन से सोचेंगे तो इस निष्कर्ष तक पहुंचेंगे कि हाँ, अब बहुत हो चुका, अब हमें शांति की दुनिया में ले चलो प्रभु, बहुत हुआ। क्या आपके मन में ये प्रश्न नहीं उठेगा? उठेगा ना! चारों तरफ अनाचार, दुराचार, परिवार में कटुता, भाई-बहन, पिता-पुत्र के मध्य खुलेआम धर्म का उल्लंघन दिखाई देता है ना! मनुष्य का जीवन जैसे कि नर्क समान बन कर ही रह गया है।

परमात्मा ने निभाया वायदा

ऐसे में हम आपको बताना चाहते हैं कि परमात्मा अपने द्वारा किये हुए वायदे अनुसार इसी समय पर प्रजापिता ब्रह्मा के तन का आधार लेकर परमात्मा फिर से देवत्व को पुनर्स्थापित करने के लिए ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा विश्व के कोने-कोने में यह संदेश और मनुष्य को श्रेष्ठ कर्म करने का निर्देश दे रहे हैं। जिसके द्वारा ही आदि सनातन देवी-देवता धर्म की पनुर्स्थापना और सर्व धर्म का महापरिवर्तन निकट भविष्य में होगा। और भारत फिर से विश्व गुरू बनेगा। भारत के आदि सनातन संस्कृति का परचम सारे विश्व में लहरायेगा। हम सब एक के हैं, इसलिए एक धर्म, एक मत और एक साम्राज्य सारे सृष्टि पर लायेंगे और कलह-क्लेश का सदा-सदा के लिए इस धरती से खात्मा हो जायेगा। और वसुधैव कुटुम्बकम की परिकल्पना इस सृष्टि पर साकार होगी।

OM - 18 - 2019 BRAHMABABA DELHI FINAL_Page 1 and 2 26/11/2019 12:54 PM Page 5

ब्रह्मा की महानता के पाँच कदम

- ब्र.कु. सूर्य,माउण्ट आबू

आदि पुरुष प्रजापिता ब्रह्मा ने इस साकार सृष्टि पर कुछ अलग किया, कुछ नया किया। कर्म वही थे लेकिन विधि नयी थी। बातें वही थी, लेकिन उन्हें समझने का और समझाने का तरीका अलग था। परमात्मा का सत्य ज्ञान और उस सत्य ज्ञान से देहभान का सर्वंश दान किया। अपने तन को तपाया, मन को श्रेष्ठ संकल्पों के साथ जोड़ा, धन को परमात्मा के कार्य में लगाया। समस्त मानव जाति के उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया। एक बार जो कुछ त्याग किया उसे कभी दुबारा हाथ नहीं लगाया। नारी शक्ति को सम्मान कर, उन्हें सबसे पहले ऊँचा दर्जा दिलाने का प्रथम श्रेय प्रजापिता ब्रह्मा और परमात्मा शिव को ही जाता है। ऐसी विभूति को कितना ना नमन करें।

वे महान कर्मयोगी थे -

वे कर्म करते हुए कर्मातीत थे। कर्मयोगी केवल वे नहीं होते जो कर्मठ हों या जो समाज सेवा के क्षेत्र में कार्यरत हों। कर्मयोगी उन्हें कहा जाता है जो कर्म करते हुए भी योगयुक्त रहते हों। जिनके मन में कर्म की छाया तनिक भी न रहती हो। जो निष्काम हों तथा कर्मबंधन से मुक्त रहते हों। वे ज्ञान-मुरली सुनाने से लेकर, दो घण्टा पत्र पढ़ने व लिखने का कार्य करते थे। सारे यज्ञ में प्रतिदिन चक्कर लगाते थे। सब कारोबार का संचालन करते थे। रात्रि क्लास कराने के बाद वे सभी वत्सों के कक्ष में जाया करते थे, यह देखने के लिए कि सबके पास पर्याप्त सुविधाएँ हैं, सब ठीक से आराम कर रहे हैं। सब बच्चों को सुलाकर फिर वे स्वयं सोते थे। इन सब कार्यों में उनका निर्मल पितृवत प्रेम व हल्कापन, चेहरे की मुस्कान व रमणीकता साफ देखी जा सकती थी। वे कर्म ऐसे करते थे मानो वे स्वयं कुछ न कर रहे हों, परमात्मा ही उनके द्वारा सबकुछ करा रहे हों। वे बुद्धि से सर्वदा ब्रह्मलोक में ही विचरण करते थे।

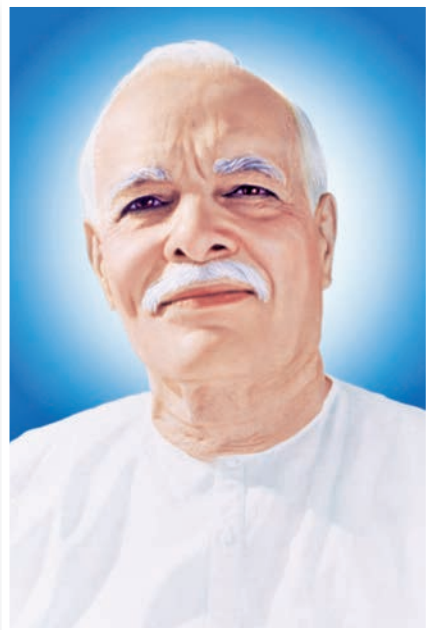

निर्माण व उपराम थे -

महानता, स्वमानधारी व निरहंकारी होती है। अहंकार मनुष्य को अलंकारहीन बना देता है। वे बचपन से ही हीरों के पारखी व अति कुशाग्र बुद्धियुक्त थे। उन्होंने अपनी बुद्धि को दिव्य व दूरांदेशी बना दिया था। लौकिक में वे धन सम्पन्न भी थे और उनका मान-सम्मान भी बहुत था। राजा भी उन्हें मान देते थे, परन्तु कभी किसी ने भी उन्हें अभिमान से बोलते या क्रोध करते नहीं देखा। स्वयं सर्वशक्तिवान के रथ, परन्तु निर-अभिमानी। सर्व शक्तियों, सर्व वरदानों व सर्व सिद्धियों से सम्पन्न, परंतु अहंकार की सम्पूर्ण इतिश्री। स्वयं सर्वश्रेष्ठ भाग्य के धनी व मास्टर भाग्यविधाता, परन्तु भोलेनाथ के साक्षात् स्वरूप।

विश्व-कल्याण करते हुए, हज़ारों वत्सों की पालना करते हुए व स्वयं प्रकृति के मालिक होते हुए भी वे पूर्णतया उपराम थे। कहीं भी अटके हुए नहीं थे। सभी इच्छाओं, कामनाओं व कर्मेन्द्रियों पर उन्होंने विजय प्राप्त कर ली थी।

वे सम्पूर्ण समर्पित थे -

"भगवानुवाच- सम्पूर्ण समर्पणता ही सम्पूर्णता है।" उन्होंने न केवल तन शिव को दिया था, न केवल धन यज्ञ को अर्पित कर दिया था, बल्कि सम्पूर्ण समय, प्रत्येक श्वांस, अपनी सम्पूर्ण शक्तियां व प्रत्येक संकल्प भी प्रभु अर्पण कर दिया था। बुद्धि की लगाम भी शिव के हाथों में थमा दी थी। उनका प्रत्येक कर्म प्रभु-कार्य अर्थ था, विश्व-कल्याणार्थ था। कितनी सूक्ष्म चीज़ें हैं ये। मैं-पन, अपनापन कहीं भी नहीं, सबकुछ तेरा। तब ही तो शिव बाबा ने भी स्वर्ग का राज्य-भाग्य दिखाकर उन्हें कहा- ये तेरा।

सारे विश्व में, सम्पूर्ण भक्तिकाल में व समस्त तपस्वियों के समक्ष आदर्श थे वे सम्पूर्णता में। जिन्होंने सिवाय श्रीमत के कुछ भी नहीं किया। तब ही तो वे सर्वप्रथम सम्पूर्ण फरिश्ता बन गये।

सम्पूर्ण बनने के लिए सम्पूर्ण डेडिकेशन था-

राजयोग का ज्ञान परमशिक्षक से मिलते ही वे निरंतर योगयुक्त स्थिति की ओर चल पड़े। साधक जानते हैं कि साधना का मार्ग परीक्षाओं का मार्ग है, इस पर आशा व निराशा का भी दौर चलता है, माया भी अवरोध उत्पन्न करती है, परंतु उन्होंने महावीर बनकर इसके लिए स्वयं को कुर्बान कर दिया। बस एक ही लक्ष्य... निरंतर योगयुक्त रहना है, सम्पूर्ण बनना है। समय कहीं भी व्यर्थ नहीं, बातों में कहीं बाह्यमुखता या विस्तार नहीं। विष्णु समान ज्ञान में मग्न और सबकुछ समेटे हुए। अन्यत्र कहीं भी रूचि नहीं। बस अर्जुन की तरह लक्ष्य ही दिखाई देता था। इसे कहते हैं महान लक्ष्य के प्रति स्वयं को डेडीकेट कर देना। न और कुछ पाने की इच्छा, न और कुछ देखने व सुनने की इच्छा।

वे सहनशील व आज्ञाकारी थे-

कोई भी मनुष्य जब ऐसा मार्ग चुनता है जो परम्पराओं से हट कर हो तो उसका विरोध तो होता ही है। वे इसके लिए तैयार थे। पवित्रता का प्रचार करके उन्होंने गालियाँ खाईं, परंतु वे सहनशील बने रहे। जो उनके अपने थे, वे पराये हो गये, जो प्रशंसक थे वे निंदक बन गये, परंतु उन्होंने सहज भाव से सब कुछ सहन किया। शारीरिक व्याधियों को भी उन्होंने हँसते-हँसते पार किया। सहन करना उनकी नेचर थी। उन्हें ये आभास नहीं था कि वे कुछ सहन कर रहे हैं। वे परमात्म आज्ञाओं का पालन अति प्रेम व विनम्रता से करते थे। शिव बाबा का कहना व उनका करना। जो भी आज्ञाएँ शिव बाबा करते थे, वे सर्वप्रथम उनका पालन करते थे। एक बार सन् 1967 में बाबा दिल्ली जाने वाले थे, परन्तु शिव बाबा ने जाने के दिन ही मना कर दिया। बस उन्होंने प्रभु-आज्ञा को शिरोधार्य किया। उनका संकल्प था- पहले मैं करूं तो मुझे देखकर सब करेंगे। क्योंकि वे हर कदम पर परमात्म-आज्ञाकारी रहे इसलिए भविष्य में सहज भाव से प्रजा भी उनकी आज्ञा का पालन करेगी।

ओमशान्ति मीडिया वर्ग पहेली - 04 (2019-2020)

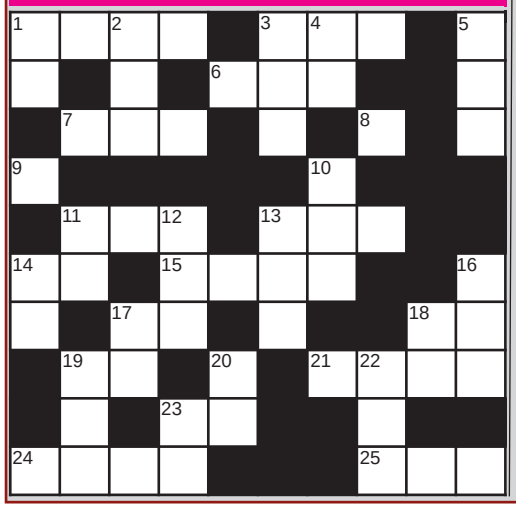

ऊपर से नीचे

1. राष्ट्र, मुल्क, भारत...की बहुत महिमा है (2)
2. धर्मशील, धर्म से सम्बन्धित (3)
3. बिना, सिवा, बगैर (3)
4. विलम्ब, समय, वक्त (2)
5. आवश्यकता, ज़रूरत (4)
7. बेहतर ख्याल, उत्तम विचार (4)
8. बहरा, जिसको सुनाई न पड़े (3)
10. आत्मा अजर...अविनाशी है (3)
12. बिल्ला, पदक (3)
13. पालकी उठाने वाले लोग (3)
14. त्रि,...लोक मुख्य हैं (2)
16. मधुबन के इस...के तुम बहार (3)
17. थोड़ा, अल्प, कम (2)
18. तूने...गंवाई सोय के (2)
19. पुराणों में वर्णित श्रीकृष्ण के बचपन का गांव (3)
20. बदुआ, अभिशाप (2)
22. अभिनय, बना बनाया अविनाशी....है (3)
23. जीव, प्राण, दम (2)

बाएं से दायें

1. किसी भी....से मोह नहीं रखना है, तनधारी (4)
3. अशरीरी, रूहानी, शरीरहीन (3)
6. यदि, जो (3)
7. श्रेष्ठ कर्म, पवित्र कर्म (3)
9. सूरज, दिनेश, भास्कर (2)
10. हक, इख्तियार, स्वत्व (4)
11. कामना, इच्छा, आश (3)
13. कटि, लंक (2)
14. बाण, शर (2)
15. मनाने का ढंग, विनती, खुशामद (4)
17. सजग, होश में रहना (2)
18. पुराणों में प्रसिद्ध मर्यादा पुरुषोत्तम देवता (2)
19. बाबा आकर हम बच्चों को काले से..बनाते हैं (2)
21. आदि...देवी-देवता धर्म, शाश्वत (4)
23. जप, बार-बार उच्चारण करना (2)
24. शक्तिशाली, ताकतवर (4)
25. ओ बाबा आपने...कर दिया, करिश्मा (3)

-ब्र.कु. राजेश, शान्तिवन

आगरा-शास्त्रीपुरम। ब्रह्माकुमारीज़ के युवा प्रभाग द्वारा चलाये जा रहे 'मेरा भारत स्वर्णिम भारत' अखिल भारतीय प्रदर्शनी बस अभियान का क्षेत्र के कारगिल पेट्रोल पंप पर विधायक हेमलता दिवाकर तथा रिटायर्ड मजिस्ट्रेट टीकम सिंह कुशवाह द्वारा स्वागत व सम्मान किया गया। प्रदर्शनी में उपस्थित हैं ब्र.कु. मधु, ब्र.कु. सरिता, रैली प्रभारी ब्र.कु. शिवानी तथा अन्य ब्र.कु. भाई बहनें।

हाथरस-आनंदपुरी कॉलोनी। मेला श्री दाऊ जी महाराज में 'पुलिस प्रशासन सम्मेलन' के पश्चात् ब्र.कु. शान्ता को सम्मानित करते हुए जिलाधिकारी प्रवीण कुमार लक्षकार, अपर जिलाधिकारी ए.के. शुक्ला, नगरपालिका अध्यक्ष आशीष शर्मा तथा अन्य।

झुन्झुनू-राज.। श्री जगदीश प्रसाद झाबरमल टिबड़ेवाला युनिवर्सिटी व ब्रह्माकुमारीज़ शिक्षा प्रभाग के मध्य एम.ओ.यू. पर हस्ताक्षर किये जाने के अवसर पर उपस्थित रहे डॉ. शशि मरोलिया,प्रो.-प्रेसीडेंट,जे.जे.टी.यू., डॉ. मधु गुप्ता,रजिस्ट्रार,जे.जे.टी.यू., डॉ. अंजु सिंह,डीन,जे.जे.टी.यू., डॉ. निधि यादव,प्रोवोस्ट, डॉ. ब्र.कु. पाण्ड्यामणि,मा.आबू, ब्र.कु. लीना,कटक, ब्र.कु. नथमल,कटक, ब्र.कु. मुकेश,रिजनल कोऑर्डिनेटर,शिक्षा प्रभाग,जयपुर तथा ब्र.कु. नागेश,जयपुर।

भरतपुर-राज.। 'अखिल भारतीय प्रदर्शनी बस अभियान' के भरतपुर पहुंचने पर सुप्रसिद्ध विहारी जी मंदिर पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए कृष्ण कुमार खंडेलवाल,सह आयुक्त,देवस्थान विभाग, पंडित राम भरोसी,विहारी जी मंदिर, ब्र.कु. कविता, अभियान प्रभारी ब्र.कु. शिवानी, ब्र.कु. ललित तथा ब्र.कु. बबीता।

OM - 18 - 2019 BRAHMABABA DELHI FINAL_Page 1 and 2 26/11/2019 12:54 PM Page 6

आपको वही मिलेगा, जो आप दूसरों को देंगे

जब हम कहते हैं कि मैंने उनके संस्कार को स्वीकार किया। इसका मतलब ये नहीं है कि वो कुछ भी करे। जो झूठ बोल रहा है वो झूठ ही बोलता रहे। जो गलत कर रहा है वो गलत ही करता रहे, नहीं। लेकिन स्वीकार किया मतलब मेरा मन डिस्टर्ब नहीं होगा, अब हम उनको राय देंगे। उनको राय देने से पहले अपने मन की स्थिति को संयम में रखकर अब उनको स्वीकार किया। अब उनको राय दी तो सामने वाले को सिर्फ राय नहीं मिलती, आपकी एकाग्रता की शक्ति भी मिलती है।

लोगों को आदत बदलने के लिए राय की नहीं, ताकत की ज़रूरत है। वो कहेंगे कि हम करना चाहते हैं लेकिन पता नहीं फिर क्यों ऐसा हो जाता है। क्योंकि वो उनका संस्कार बना हुआ है। तो किसी का संस्कार बदलने के लिए उनको ताकत देनी पड़ती है। रोज़-रोज़ बोलके, ऐसा नहीं करो, ऐसा नहीं करो... वो नहीं बदलेंगे ऐसे। लेकिन उनको उसकी ताकत देनी पड़ती है। और ताकत कैसे मिलेगी, जब हमारी बैटरी फुल चार्ज्ड होगी। तो जब हम सुबह परमात्मा को याद करने बैठेंगे, योग करेंगे, ध्यान लगायेंगे तो हम ये संकल्प करेंगे कि मैं हरेक को स्वीकार करती हूँ। मुझे किसी से कुछ नहीं चाहिए। क्योंकि हम औरों से लेने वाले नहीं हैं, देने वाले हैं। जैसे हम कार्यक्रम की शुरुआत दीया जलाकर करते हैं और हम सब अपने घर में दीया जलाते हैं। और दीया जलाना शुभ होता है। दीया बुझ जाये तो क्या होता है? अशुभ होता है। इसीलिए अगर किसी के घर में दीया बुझने लगता है तो क्या करते हैं, उसकी तरफ भागते हैं और उसको बुझने से रोक लेते हैं। ये कौन-सा दिया है जो जलाना शुभ होता है? और ये कौन सा दीया है जो बुझ जाये तो अशुभ होता है? क्योंकि वो जो 'दीया' है मिट्टी का वो अगर बुझ जाये तो कुछ अशुभ नहीं होने वाला घर के अन्दर। 'दीया' मतलब दिया। मैंने प्यार दिया, मैंने सम्मान दिया, ये दीया जब बुझता है ना, तब अशुभ होता है। लेकिन हमने क्या कहा कि मुझे चाहिए, चाहिए, चाहिए, तो चाहिए वाला जब होता है तब अशुभ होता है। और 'दिया' जब होता है तब शुभ होता है। तो हर घर में एक 'दीया' चाहिए। मतलब हर घर में एक सदस्य चाहिए जो बोलेगा कि मैंने प्यार दिया, सम्मान दिया, मुझे किसी से कुछ नहीं चाहिए। आप रेडी हैं अपने घर का दीया बनने के लिए?

हम जब किसी को कुछ भी देते हैं, उसमें हम किस भाव से देते हैं, ये ज़्यादा महत्वपूर्ण है, ना कि कोई स्थूल वस्तु देना। जैसे 'दीया' अगर बुझ जाता है तो हम अशुभ मानते हैं, वैसे ही अगर हम किसी को कुछ देते हैं, तो यदि उसमें मंगल भाव समाहित है तब वो उसे हील करेगा और उसे सुकून मिलेगा और वो बदलेगा भी।

ब्र.कु. शिवानी, जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा

अभी देख लो एक बार कि हमें क्या चाहिए। अपनी आँख बंद करके देखें कि अब हमें कुछ नहीं चाहिए, हमारे पास सबकुछ है। ऐसे ही लाइन में खड़े हो जाते हैं और बोलते हैं कि चाहिए, चाहिए। लेकर आओ उनको सामने, परिवार के बड़े-छोटे, वो सिर्फ शरीर की एज है। हर एक आत्मा है, घर के लोगों को भी लाओ सामने और जिनके साथ सारा दिन काम करते हैं उनको भी सामने लेकर आओ। और सबको देखते हुए एक संकल्प करते हैं, मैं सबको देने वाली आत्मा हूँ... मैं सबको देने वाली आत्मा हूँ। प्यार देने वाली, सम्मान देने वाली, खुशी देने वाली, मुझे इनसे कुछ नहीं चाहिए। रोज़ एक बार करना है ये। क्या होता है, सोचने का नज़रिया बदल जाता है। हमारे पास भरपूर है, खुशी हमारा संस्कार है, शांति हमारा संस्कार है, शक्ति हमारा संस्कार है, लेकिन उसको यूज़ करने के बजाय हम हाथ फैलाकर खड़े हो जाते हैं कि मुझे चाहिए, मुझे चाहिए। और फिर कहते हैं कि दीया जलाना शुभ होता है। आज से रोज़ अपने अन्दर का ये आत्मा रूपी दीया जलाना है।

रोज़ सुबह अपने आपको कहना है कि मैं सारा दिन सबको देने वाली आत्मा हूँ। मैं अपने घर का दीया हूँ। और उसमें ये नहीं देखना कि ये छोटी उम्र का है, बड़ा है, कौन से ओहदे का है, कुछ नहीं, मैं सबको देने वाली आत्मा हूँ। जो सबको देगा उसको कौन देगा? जब हम कुछ देते हैं किसी को, तो देते समय सबसे पहले किसको मिलता है? वो हमको ही मिलता है। जब हम किसी को गुस्सा देते हैं तो पहले किसको मिलता है? अगर हम एक सीन लायें सामने, एक दूसरे पर गुस्सा कर रहे हैं, तो एक गुस्सा कर रहा है और दूसरा ले रहा है। तो ब्लड प्रेशर किसका बढ़ेगा? देने वाले का या लेने वाले का? हार्ट बीट किसकी बढ़ेगी? देने वाले की। मन डिस्टर्ब किसका होगा? देने वाले का। लेने वाले का क्या होगा? लेने वाले के पास चॉइस है। लेना या नहीं लेना। देने वाले के पास कोई चॉइस नहीं है। तो परमात्मा ने मंत्र दे दिया है कि देने में ही लेना समाया हुआ है।

जो आप चीज़ देंगे वो देने से पहले किसको मिलेगी? कभी-कभी तो किसी पर गुस्सा करो तो वो मुस्करा रहे होते हैं हमारे ऊपर। उनको तो अब आदत पड़ गई है हमारी। तो अन्दर से बोलते हैं कि चलो अभी तो 5 मिनट और लेक्चर चलेगा इनका। पूरा हो तो मैं चलूँ अपने काम पर वापिस, कर ले अच्छा है। आज का कोटा तो पूरा हो जायेगा ना मेरा डांट खाने का। तो उनको आदत पड़ गई है। वो स्वीकार नहीं करते। उनका ब्लड प्रेशर नॉर्मल रहता है। क्योंकि वो लेने वाली साइड पर है। लेने वाले के पास चॉइस होती है कि लेना है कि नहीं लेना। देने वाले के पास कोई चॉइस नहीं है। तो जो देता है उसको ही मिलता है। आपको जो चाहिए वही दें।

बयाना-भरतपुर(राज.)। उप मुख्यमंत्री सचिन पायलट तथा नागरिक सुरक्षा राज्यमंत्री भजन लाल जाटव के बयाना आगमन पर उन्हें ब्रह्माकुमारीज़ के स्वर्णिम भारत अभियान की जानकारी देने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. बबीता,भरतपुर एवं अभियान यात्री ब्र.कु. बबीता,दिल्ली।

नेपाल-वीरगंज। सेवाकेन्द्र की 45वीं वर्षगांठ एवं नव निर्मित 'ओम शांति भवन' के उद्घाटन कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए प्रदेश नं.2 के माननीय भौतिक पूर्वाधार विकास मंत्री जीतेन्द्र सोनल, राजयोगिनी ब्र.कु. राज दीदी,निर्देशिका,ब्रह्माकुमारीज़ नेपाल व अन्य गणमान्य लोग। कार्यक्रम में शरीक हुए सांसद डॉ. पुष्पा कुमारी कर्ण कायस्थ, सांसद रमेश पटेल, सांसद भीमा यादव, मेयर विजय सरावगी, उद्योग वाणिज्य संघ के अध्यक्ष गोपाल केडिया, ब्र.कु. रामसिंह, ब्र.कु. तिलक तथा अन्य गणमान्य लोग व ब्र.कु. भाई बहनें।

फूलबनी-ओडिशा। आध्यात्मिक चर्चा के पश्चात् समूह चित्र में कॉमर्स एंड ट्रान्सपोर्ट स्टेट मिनिस्टर पद्मनाभ बेहेरा, ब्र.कु. भारती, ब्र.कु. अर्जुन,मा.आबू, डॉ. परिस्मिता तथा अन्य।

नेपाल-राजविराज। आध्यात्मिक कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए उपमेयर सरिता यादव, ब्र.कु. भगवती तथा अन्य।

भुवनेश्वर-ओडिशा। सुरेश चन्द्र महापात्र,आई.ए.एस.,डेवलपमेंट कमिश्नर एंड एडिशनल चीफ सेक्रेट्री,ओडिशा को गुलदस्ता भेंट करते हुए ब्र.कु. लीना, ब्र.कु. विजय तथा ब्र.कु. मधु।

रक्सौल-बिहार। उपसेवाकेन्द्र के शिलान्यास कार्यक्रम में उपस्थित हैं ब्र.कु. राज दीदी,निदेशिका,ब्रह्माकुमारीज़,काठमाण्डू,नेपाल, सीमा जागरण मंच के राज्य संयोजक समाजसेवी महेश अग्रवाल, ब्र.कु. रामसिंह,काठमाण्डू, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. ज्ञानु तथा अन्य।

महुआ-बिहार। ज्ञानचर्चा के पश्चात् संजीत कुमार राय,मुखिया सह अध्यक्ष,मुखिया संघ,महुआ को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. दिव्या।

सोलखूमवू-माउण्ट एवरेस्ट। 'सकारात्मक जीवन शैली' कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए विधायक बुद्धि कुमार राज भंडारी, ब्र.कु. भगवान,मा.आबू, ब्र.कु. भगवती तथा अन्य।

ओमशान्ति मीडिया सदस्यता हेतु

कार्यालय - ओमशान्ति मीडिया
संपादक - ब्र.कु. गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़, शान्तिवन, तलहटी,
पोस्ट बॉक्स न - 5, आबू रोड (राज.) 307510
सम्पर्क- M- 9414006096, 9414182088,
Email-omshantimedia@bkivv.org

सदस्यता शुल्क : भारत - वार्षिक 200 रूपये, तीन वर्ष 600 रूपये,
आजीवन 4500 रूपये। विदेश - 2500 रूपये (वार्षिक)
कृपया सदस्यता शुल्क 'ओमशान्ति मीडिया' के नाम मनीऑर्डर या
बैंक ड्राफ्ट (पेएबल एट शांतिवन, आबू रोड) द्वारा भेजें।

OM - 18 - 2019 BRAHMABABA DELHI FINAL_Page 1 and 2 26/11/2019 12:54 PM Page 7

ब्रह्मा बाबा में कुछ नया करने, वस्तु-स्थिति व विषय को स्पष्ट, सरल और सटीक करने की उछल सदा बनी रही। बाबा विषय को ऐसे स्पष्ट करते थे कि उस विषय को लेकर किसी भी जिज्ञासु की जिज्ञासा और बढ़ जाये। बाबा कोई भी विषय स्पष्टीकरण ऐसा करवाते थे जिसके अन्दर समय के अनुसार ज्ञान, धारणा का मर्म समाया हो। बाबा का चिंतन बहुत उम्दा और उत्साह देने वाला होता। हर बात को नये ढंग से, नये रूप से, नये आयाम को स्पष्ट करने वाला होता।

स्पष्ट और श्रेष्ठ ज्ञान के माध्यम ब्रह्मा बाबा

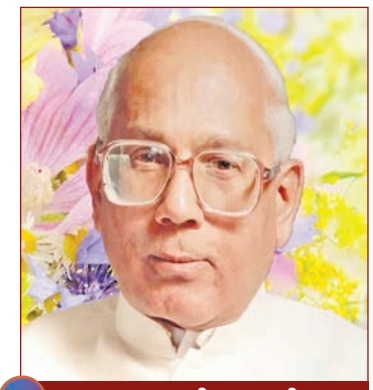

- ब्र.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

बाबा ज्ञान-बिन्दुओं को जिस रीति से स्पष्ट करते, वह रीति भी विचित्र थी और सम्पूर्णता की ओर ले जाने वाली होती थी। वे ईश्वरीय ज्ञान के किसी भी सिद्धान्त को सूक्ष्मता की सीमा तक ले जाते। उदाहरण के तौर पर, साहित्य-लेखन के कार्य में लगे होने के कारण मैं जब कभी उनके पास कोई लिखित निबंध अथवा लेख ले जाता तो उसमें शब्दों के साथ वे कई विशेषण जोड़ देते, उदाहरण के लिए जैसे व्यक्ति को ज्ञान ही नहीं देना, विशेष ज्ञान देना है।

बाबा लेखन को स्पष्ट और विशेषण युक्त बनवाते

एक बार की बात है कि जो लिखित सामग्री मैं बाबा के पास ले गया, उसमें वर्तमान सृष्टि को कलियुगी सृष्टि कहा गया था जो कि ईश्वरीय ज्ञान के अनुसार ठीक ही था। बाबा ने कहा कि कलियुगी शब्द से पहले 'धर्म-ग्लानि युक्त', 'सत्यता-रहित' शब्द जोड़ो। जब मैं ये विशेषण जोड़कर तथा अन्य संशोधन करके बाबा के पास लेख को पुनः ले गया, तब बाबा ने कहा कि इसमें कुछ और विशेषण जोड़ने चाहिए और तीसरी बार कुछ और विशेषण जोड़ने को कहा। अंत में कलियुगी शब्द से पहले 'तमोप्रधान, भ्रष्टाचारी, पतित, आसुरी, मर्यादाहीन, हिंसा-प्रधान' आदि-आदि शब्द भी जुड़े हुए थे। इसके बाद भी बाबा ने कहा कि '100 प्रतिशत और दिवालिया' शब्द इसमें और जोड़ दो।

सुभाषित में समय का मर्म समाया हो

इसी प्रकार एक बार जब यह सुभाषित(सुवाक्य) लिखा गया कि "पवित्रता, सुख और शांति आपका ईश्वरीय जन्मसिद्ध अधिकार है" तब बाबा ने कहा कि इससे पहले '100 प्रतिशत या सम्पूर्ण' शब्द जोड़ो और यह लिखो कि "21 जन्मों के लिए" जन्मसिद्ध अधिकार है। यह लिखने के बाद फिर बाबा ने कहा कि अब प्रश्न उठता है कि ईश्वरीय जन्म कब होता है और यह अधिकार कब मिलता है? यह बात समझाते हुए उन्होंने इस सुवाक्य में "अब नहीं तो कब नहीं" शब्द जोड़ने का निर्देश दिया।

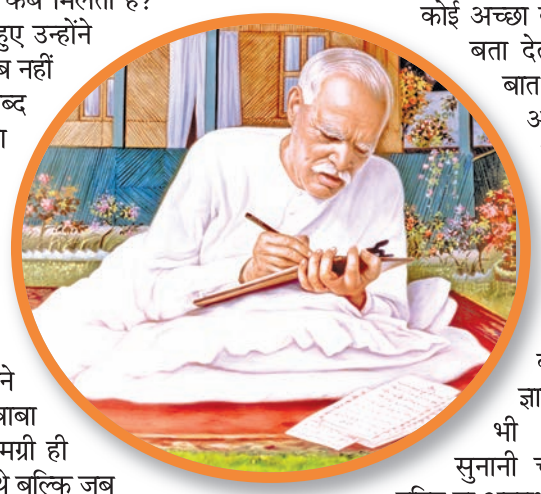

भाषण कर्ता की वाणी में जौहर हो

ज्ञान को सम्पूर्णता से समझने और समझाने के ये प्रयत्न बाबा केवल लिखित सामग्री ही के द्वारा नहीं करते थे बल्कि जब कहीं सम्मेलन या प्रवचन आदि होता, उसमें भी बाबा तीन प्रकार की सम्पूर्णता की ओर ले जाने का सदा विशेष प्रयास कराते रहते। एक तो बाबा इस ओर ध्यान खिंचवाते कि वक्ता की अपनी स्थिति पवित्र और योग-युक्त होनी चाहिए। इसे वे यूं समझाते कि जैसे तलवार में जौहर होना ज़रूरी है, ऐसे ही पवित्रता और योग-युक्त स्थिति ज्ञान रूपी तलवार का जौहर है।

ऐसा नुक्ता दो जो ज्ञान समझ में आ जाये और धारण भी कर सके

दूसरा वे इस ओर ध्यान खिंचवाते कि प्रवचन में कौन-कौन सी बात बताना ज़रूरी है। इसका स्पष्टीकरण करते हुए वे समझाते कि जैसे कोई अच्छा वकील ऐसा नुक्ता बता देता है कि जिससे बात जज की समझ में आ जाती है और जो जज पहले फाँसी की सज़ा देने की बात सोच रहा था, वह अब अपराधी को मुक्त करने का निर्णय करता है। वैसे ही ज्ञानवान व्यक्ति को भी ऐसी-ऐसी बात सुनानी चाहिए कि पापी, पतित या अपराधी व्यक्ति की बुद्धि में वह ऐसी बैठ जाए कि पहले जहाँ वह भोग-विलास के जीवन की ओर प्रवृत्त था, अब वह उससे मुक्त होने की बात का निर्णय करे। बाबा कहते कि वकील को अगर समय पर प्वाइंट याद नहीं आयेगी और वो जज के आगे कुछ नहीं रखेगा तो अपराधी अपना मुकदमा हार जायेगा और दण्ड का भागी होगा। यहाँ तक कि हो सकता है, उसे मृत्युदण्ड भी भोगना पड़े। गोया वकील की छोटी-सी गफलत से कितना नुकसान हो सकता है। इसी प्रकार ज्ञानवान प्रवक्ता अगर भाषण के समय आवश्यक बातें कहना भूल जाता है तो सुनने वाले लोग विषय-विकारों में गोता लगाए दुःख-दण्ड के भागी बनते रहते हैं।

ज्ञान के साथ, ज्ञान देने का तरीका भी उत्तम और व्यवहारिक हो

तीसरा, वे इस बात की ओर ध्यान दिलाते कि बात समझाने की विधि क्या हो। केवल बात ही ज़रूरी नहीं होती, बात करने का तरीका भी महत्वपूर्ण होता है। बात कहना भी एक कला है। उस पर ध्यान देना, उसका अभ्यास करना, उसमें सम्पूर्णता लाना भी ज़रूरी है। इस बात को समझाते हुए वे कहते कि डॉक्टर जब किसी को टिंक्चर आयोडीन लगाता है तब वह उसे साथ-साथ सहलाता भी है, फूंक भी मारता है। जब कोई सर्जन किसी का ऑपरेशन करता है तो वह उसे क्लोरोफॉर्म सूंघाता है ताकि उसे दर्द न हो। जब कोई इंजेक्शन लगाता है, तब वह पहले सूई को उबलते हुए पानी में डाल कर कीटाणु-रहित करता है। इस प्रकार बाबा समझाते- दूसरों को सम्मान देते हुए तथा स्नेह और मर्यादा युक्त, शुभ और कल्याण की भावना से, अनुभव, निश्चय और ओज की भाषा से समझाना चाहिए, तब जाकर वह तीर ठिकाने पर लगता है। इस तरह बाबा में मैंने हमेशा नये-नये उमंग-उत्साह का संचार देखा।

पहचानें मन की अद्भुत शक्ति को

वायब्रेशन्स भी मन की शक्ति का कमाल है

हर दिन का एक संकल्प हमारा, उस बिन्दु(बूंद) की तरह ही है जो पानी में पड़ता है, पर मिक्स होने के कारण दिखाई नहीं देता है। यह काम लेकिन वही करता है। बूंद-बूंद से सागर बनता है ना, ऐसे ही संकल्प की बूंद भी हर वायब्रेशन्स का आधार है।

एक मानव की कहानी ही है कि जिसने अपने संकल्पों से पूरे माउण्ट आबू के वायब्रेशन्स को ही बदल दिया। आज वहाँ पर पर्यटकों की भीड़ लगी रहती है। सभी एक तीर्थ स्थान के रूप में माउण्ट आबू आते-जाते हैं। लेकिन पर्यटकों को घुमाने वाले गाइड सबसे पहले उन स्थानों पर ले जाते हैं, जहाँ पर आदि पिताश्री, प्रजापिता ब्रह्मा ने लगभग 33 वर्षों तक तपस्या की। क्या वायब्रेशन्स हैं वहाँ के! अकेले थे, संकल्प के बारे में पता था, जैसा सोचेंगे वैसा ही होगा। बस होना क्या था, शुरू किया तप और परमात्मा की शक्ति से पूरे माउण्ट आबू के वायब्रेशन्स ही बदल डाले। क्या था, बस यहीअभ्यास था। सभी दुःखी मानव जाति के प्रति, सुख व शांति का। अब यह सुख व शांति का संकल्प ब्रह्मा बाबा कर रहे थे।

आज जो वहाँ पांव भी रखता है तो उसे यह अनुभव होने लगता है कि यहाँ कुछ तो है जो हमें रोकता है। यह है बूंद-बूंद का संकल्प जो बाप ने किया। हमें भी जब कभी वहां जाने का मौका मिलता है तो हम उस वायब्रेशन्स में जाकर कुछ ऐसे ही संकल्पों का सहयोग देते हैं। यह सहयोग देना बल्कि लेना है कि उसी वक्त से हम भी अच्छे-अच्छे संकल्प करते हैं। और वो फलीभूत होता ही है। आप भी अपने घर में बैठकर, छोटे-छोटे सुखदायी संकल्प कर अपने आस-पास का वातावरण ऐसा सुन्दर बना सकते हैं। जो चाहे, जैसा चाहे वो प्राप्त कर सकते हैं। हमें तो बड़ा ही गर्व होता है कि ऐसे प्रजापिता ब्रह्मा बाबा ने, इतनी हज़ारों आत्माओं को अपने संकल्पों के बल से नव जीवन देने के निमित्त बने। और आज आलम यह है कि वहाँ पर बैठने की जगह नहीं होती है।

हर वक्त उस वायब्रेशन्स में आने वाले का तांता लगा होता है। ऐसे हम भी चाहें तो अपने आस-पास अलौकिक वातावरण का निर्माण कर सकते हैं। अब हमारा संकल्प यह होना चाहिए 18 जनवरी, 2020 तक हर दिन छोटे-छोटे श्रेष्ठ संकल्प कर, उन संकल्पों द्वारा खुद का व घर का वातावरण बदल कर दिखाएं। वैसे भी इस मास को तपस्या मास कहा गया है। और यह उस महात्मा के लिए एक सच्ची श्रद्धाजंली होगी, संकल्पों की। क्यों न हम भी इस शक्ति का प्रयोग अद्भुत तरीके से करें।

जोधपुर-राज.। ऋषिकुल धाम ट्रस्ट के महामण्डलेश्वर स्वामी डॉ. शिव स्वरूपानंद सरस्वती जी को सेवाकेन्द्र में आने पर आध्यात्मिक चर्चा के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. शील।

दिल्ली-सीता राम बाज़ार। अलौकिक उद्घाटन समारोह कार्यक्रम में मंचासीन हैं राजयोगी ब्र.कु. बृजमोहन, राजयोगिनी ब्र.कु. पुष्पा दीदी, राजयोगिनी ब्र.कु. विमला दीदी तथा सभी का स्वागत करते हुए ब्र.कु. सुनीता बहन।

OM - 18 - 2019 BRAHMABABA DELHI FINAL_Page 1 and 2 26/11/2019 12:54 PM Page 8

लौकिक पिता में पाया परमपिता - दादी निर्मलशांता

मैं इतनी सौभाग्शाली हूँ कि जो मेरा जन्मदाता लौकिक पिता, उसी तन में पारलौकिक पिता ने प्रवेश किया और वही तन मानव सृष्टि का नवयुग निर्माता प्रजापिता ब्रह्मा कहलाया। ये तीनों ही एक ही रथ में हों, ऐसा किसी और का भाग्य नहीं। ये मुझे ही हुआ। पारलौकिक, अलौकिक और लौकिक तीनों पिताओं को मैंने एक में ही पाया। यह अद्भुत संयोग और भाग्य सच में ही निराला और अनूठा है।

ब्रह्माकुमारी संस्था की पूर्व संयुक्त मुख्य प्रशासिका दादी निर्मलशांता ने बताया कि शिवबाबा की प्रवेशता के पहले दादा लेखराज लौकिक परिवार को बहुत लाड़-प्यार से पालते थे। लेकिन शिवबाबा की प्रवेशता के बाद ऐसे लगता था कि जैसे हमें पहचानते ही नहीं हैं। ऐसे पूछते थे - 'किसके सामने खड़ी हो? पहचानती हो?' ये शब्द सुनकर आश्चर्य लगता था कि जन्मदाता बाप और ये हमसे पूछे कि पहचानती हो? ऐसे मिलते थे जैसे हम अंजान हैं। ऐसा सुनकर ज़रा फील होता था कि बाबा को यह क्या हो गया! ऐसा सोचने पर मेरी लौकिक माँ मुझे समझाती थी कि ये तुम्हारा बाबा वो पहले वाला बाबा नहीं है। इसमें परमात्मा आता है। तो मुझे आश्चर्य लगता था। मुझे इस बात का सम्पूर्ण विश्वास और निश्चय कराने के

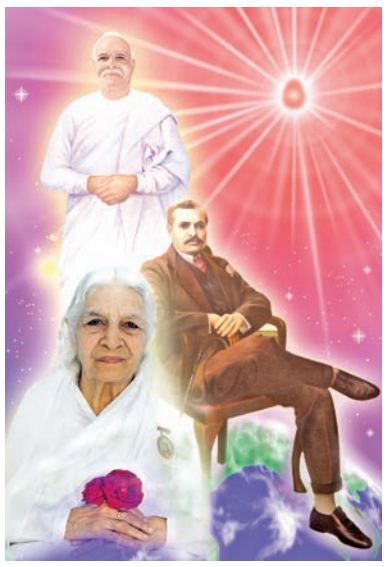

लिए तथा मेरे लौकिक जीवन में सम्पूर्ण परिवर्तन लाने के लिए विशेष चमत्कार मैंने देखा।

उसी दिन जब मैं रात को सो गई तो फिर से मुझे वही आवाज़ सुनाई दी, पहचानती हो? तो मैंने सोचा आज बाबा से दिन में बात हुई थी, इसलिए मुझे नींद में यही सपना आया है। फिर जैसे ही सोना चाहा तो कमरे में सूर्य की लाइट के समान रोशनी आने लगी। बड़ी तेज़ लाइट, जैसे कोई सर्चलाइट आ रही हो। अतः मैं उठकर बैठ गई। तो क्या देखा - सफेद लाइट के बीच में से बाबा आ रहे हैं। उसमें कभी श्रीकृष्ण तो कभी साकार बाबा दिखाई दे रहा था। इस प्रकार दोनों ही रूप आपस में अदली-बदली हो रहे थे। तो विचार चला कि ये मेरा बाबा है या श्रीकृष्ण है!

इस प्रकार देखते-देखते बाबा मेरे पास बहुत नज़दीक चला आया। तथा श्रीकृष्ण के रूप में मेरे से हाथ मिलाने लगा - जैसे ही मैंने अपना हाथ उसके हाथ में दिया तो बाबा दिखाई देता। बाबा के हाथ में मेरा हाथ है और फिर वही कृष्ण बन जाता। बस उसी समय से मेरी बुद्धि में परिवर्तन हो गया तथा हाथ मिलाते हुए मैंने मन में जैसे प्रतिज्ञा की कि बस बाबा! मैंने आपको पहचान लिया। आप जैसा कहेंगे, जो कहेंगे, मैं वही करूंगी। ऐसा पक्का निश्चय करने के बाद, उसी दिन से मेरी सारी दिनचर्या में महान परिवर्तन आ गया। मन में वैराग्य आ गया तथा सादगी का जीवन अच्छा लगने लगा। वैसे घर में नौकर आदि सब थे। हाथ से पानी पीने की भी दरकार नहीं थी। लेकिन अब तो जो काम कभी भी नहीं किया था, वो बड़े प्यार से करने लगी। जैसे खाना बनाना, घर की सफाई आदि के कार्य सब स्वयं अपने हाथों से करने लग गई। ये परिवर्तन मेरी जिंदगी का बहुत बड़ा परिवर्तन था।

मन को समझ गये तो उसे चलाना आसान हो जायेगा

गतांक से आगे... हम क्या कहेंगे कि आज मुझसे बात नहीं करो क्योंकि किसी ने मेरी गाड़ी को खराब कर दिया, माना गाड़ी के साथ लगाव है। गाड़ी पर किसी ने स्क्रैच कर दिया तो इतना गुस्सा और वो उस चीज़ को लेकर इतना अपसेट रहेंगे, दूसरे पर भी गुस्सा करते रहेंगे। किया किसी और ने है, उसका पता ही नहीं है। और गुस्सा हो रहे हैं किसी और पर। अपनी खुशी खत्म हो गई, कारण क्या? भौतिकता की अधीनता है। इसीलिए हमारे विचारों की स्वतंत्रता ही नष्ट हो गई। दूसरों के घर में तो बहुत अच्छा किचन बना दिया। हमारे घर में ऐसा ही किचन है क्या? ज़िन्दगी भर हमें ऐसा ही करना है क्या? ज़िन्दगी भर ऐसे ही चलाते रहना है क्या? ये प्रॉब्लम है, वो प्रॉब्लम है, ये सुविधा नहीं, वो सुविधा नहीं और इसी कारण से ईर्ष्या जब अन्दर में उत्पन्न होती है तो भी हमारे पॉज़ीटिव विचारों की स्वतंत्रता नष्ट हो जाती है। ये चीज़ मेरे पास नहीं है, देखो दूसरे लोग कपड़ों के हिसाब से जूते पहनकर आते हैं, दूसरे लोग कपड़ों के हिसाब से ये पहन कर आते हैं, कपड़ों के हिसाब से अपने आपको तैयार करके आते हैं, लेकिन हमारे पास नहीं है। कोई व्यक्ति बहुत होशियार है, उनके आइडियाज़ अच्छे हैं तो कॉन्फिडेंस खत्म कर देगा आपका। नेगेटिव विचार शुरू कर देगा। दूसरे लोग मुझे पसन्द नहीं करते हैं। इसीलिए ऐसा होगा तो फियर ऑफ रिजेक्शन, डिपेंडेन्सी, एंगर, ये सब भावनायें मन के अन्दर क्रियेट होती हैं। अब अगर पॉज़ीटिव विचार करना है तो क्या करना होगा हमें? हमारे पास शक्ति है, हमें अपने आप से ये कहना है कि मैं

मैं अपने विचारों की मालिक हूँ। मैं अपनी विचारधारा को बदल सकती हूँ। कोई मेरी स्वतंत्रता को छीन नहीं सकता है, जब तक मैं खुद न दूँ। इस तरह से अपनी विचारधारा का परिवर्तन करें।

-ब्र.कु. उषा,वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

अपनी विचारधारा को बदलने की मालिक हूँ। मैं अपनी विचारधारा को बदल सकती हूँ। कोई मेरी स्वतंत्रता को छीन नहीं सकता है जब तक मैं खुद न दूँ। और इस तरह से अपनी विचारधारा का परिवर्तन करें। जो आपकी परिस्थितियां, लोग, भौतिकता आपको प्रभावित कर रही हैं, आप सोचो मुझे परिस्थिति पर प्रभाव डालना है अपना। मुझे लोगों पर अपना प्रभाव डालना है, मुझे चीज़ों पर भी अपना प्रभाव डालना है और इस तरह ये साइकिल हमको चेंज करना है। क्योंकि ये प्रतिउत्तर मांग रहा है। चाहे आप पॉज़ीटिव दो या नेगेटिव दो, आपके हाथ में ही आपकी स्वतंत्रता है। इसीलिए आप उसके अधीन हो जाते हैं तो आपकी विचारधारा नेगेटिव हो जाती है। जब आप मालिक बन जाते हैं तो वो विचारधारा पॉज़ीटिव हो जाती है। हमारे मन की स्थिति अधिकतर दूसरे क्या कहते हैं उसके आधार पर चलती है। लेकिन नहीं, मैं अपनी मनोस्थिति को खुद क्रियेट कर सकती हूँ, अपने विचारों के आधार पर। ये दृढ़ता अपने अन्दर लानी है। ये आत्म विश्वास अपने अन्दर लाना है। जब ये मांगने की बात आ जाती है कि दूसरे मुझे रिस्पेक्ट करें, तो आप अधीन हो जायेंगे उसके। लेकिन मैं उसको रिस्पेक्ट दूँ तो वो अपने आप ही देंगे। इसलिए इस विधि से समझ लो कि अधीनता जहाँ आई वहाँ आप नीचे हो जायेंगे। दूसरे आपसे ऊपर हो जायेंगे। इसीलिए आप ऊपर रहो तो दूसरे अपने आप नीचे हो जायेंगे। इस तरह से आप अपना प्रभाव डालिये। मुझे प्यार की ज़रूरत है नहीं, मैं दूसरों से प्यार से बात करूँ, प्यार से चलाऊं तो वो मुझे प्यार करेंगे। जो हम देंगे वही मिलेगा। पता नहीं लोग मेरे पर विश्वास नहीं करते हैं, नहीं, मैं अपने अन्दर आत्म विश्वास को जागृत करूँ, वो अपने आप मेरे पर विश्वास करने लगेंगे। तो इस तरह से हम अपने दृष्टिकोण को बदलें अपने जीवन के प्रति क्योंकि दृष्टिकोण को जैसे बदलेंगे वैसे ही विचारधारा बदलने लगेगी। जैसा आप देखते हैं, देखने के दो तरीके होते हैं, जैसा आप देखेंगे वैसी ही आपकी विचारधारा चलेगी। अगर आपका दृष्टिकोण सही है तो आपकी विचारधारा सही होगी। अगर आपका दृष्टिकोण ही गलत है तो आपकी विचारधारा भी गलत होगी। इसीलिए ये चेंज करना है।

- क्रमशः

यह जीवन है

'सम्मान एक निवेश की तरह होता है।' ये ज़िन्दगी भी हमें कितने मोड़ देती है और हर मोड़ पर एक नया सवाल दे देती है, हम ढूंढते रह जाते हैं जवाब उम्र भर, जब जवाब मिलता है, तब तक तो ये ज़िन्दगी फिर से एक नया सवाल हमारे सामने खड़ा कर देती है। कहते हैं कि जब हम ऊंचाइयों की सीढ़ियां चढ़ रहे हों, तब हमें पीछे छूटे लोगों से अच्छा व्यवहार करना चाहिए। क्योंकि वापसी में वे लोग, फिर से हमें उसी रास्तें में मिलेंगे। ध्यान रहे कि जितना सम्मान अथवा अपमान, हम दूसरों का करते हैं, वो सारे का सारा ब्याज सहित हमें वापस मिल जाता है।

ख्यालों के आईने में...

यदि आत्मा अन्दर से स्वच्छ है तभी वह बाहर भी साफ सफाई रख सकती है। इसलिए सच्चे दिल से परमात्म मिलन मनाने से आपके जीवन के हर कर्म में कुशलता आने लगती है।

जो व्यक्ति किसी दूसरे के चेहरे पर हँसी और जीवन में खुशी लाने की क्षमता रखता है, ईश्वर उसके चेहरे से कभी हँसी और जीवन से खुशी कम नहीं होने देता।

गीता नगर-ऋषिकेश(उत्तराखण्ड)। गंगोत्री विहार,ढालवाला में नये राजयोग सेवाकेन्द्र के उद्घाटन पर सात दिवसीय राजयोग शिविर के शुभारंभ कार्यक्रम में मंचासीन हैं ब्र.कु. आरती दीदी, अतिथि तथा ब्र.कु. बहन।

OM - 18 - 2019 BRAHMABABA DELHI FINAL_Page 1 and 2 26/11/2019 12:54 PM Page 9

कथा सरिता

एकाग्रता

एक गांव में एक किसान रहता था। वह एक कुआं खोदना चाहता था। एक दिन उसने कुआं खोदना शुरू किया। कुछ फीट तक खुदाई करने पर भी जब उसे पानी नहीं दिखाई दिया तो वह निराश हो गया। फिर उसने दूसरी जगह खुदाई की, किंतु पानी कहीं पर भी नहीं निकला। इस तरह 6-7 जगहों पर उसने खुदाई की, किंतु उसे पानी नसीब नहीं हुआ। फिर वह बहुत दुःखी और निराश होकर घर लौट गया। अगले दिन उसने सारी बात एक बुजुर्ग व्यक्ति को बताई। उस व्यक्ति ने उसे समझाते हुए कहा, "तुमने पांच अलग-अलग जगहों पर 6-7 फुट के गड्ढे खोदे, लेकिन फिर भी तुम्हें कुछ हाथ नहीं लगा। यदि तुम अलग-अलग जगह पर खुदाई न करके एक ही स्थान पर इतना खोदते, तो तुम्हें पानी अवश्य मिल जाता। तुमने धैर्य से से काम नहीं लिया और थोड़ा-थोड़ा खोदकर अपना निर्णय बदल लिया। आज तुम एकाग्रता से एक ही स्थान पर गड्ढा खोदो और जब तक पानी दिखाई नहीं दे तब तक खोदना जारी रखना। तुम्हें सफलता ज़रूर मिलेगी।" उस दिन किसान ने दृढ़ निश्चय करते हुए एक बार फिर खुदाई शुरू कर दी। लगभग 25-30 फुट की खुदाई हो जाने पर खेत से पानी निकल आया। यह देखकर किसान बहुत खुश हुआ और मन ही मन उस व्यक्ति का धन्यवाद करने लगा।

शिक्षा : यदि किसी कार्य को पूरी एकाग्रता के साथ किया जाए तो उसमें सफलता ज़रूर मिलती है।

सच्ची मदद

एक नन्हा पंछी अपने परिवार जनों से बिछुड़ कर अपने घोंसले से बहुत दूर आ गया था। उस नन्हे पंछी को अभी अच्छे से उड़ान भरनी नहीं आती थी। उसने उड़ना सीखना अभी शुरू ही किया था। उधर नन्हें पंछी के परिवार वाले बहुत परेशान थे। इधर नन्हा पंछी भी समझ नहीं पा रहा था कि वो अपने घोंसले तक कैसे पहुंचे! वह उड़ान भरने की काफी कोशिश कर रहा था, पर बार-बार कुछ ऊपर उठकर गिर जाता।

कुछ दूर से एक अनजान पंछी अपने मित्र के साथ ये सब दृश्य बड़े गौर से देख रहा था। कुछ देर देखने के बाद वो दोनों पंछी उस नन्हे पंछी के करीब आ पहुंचे। नन्हा पंछी उन्हें देख के पहले घबरा गया फिर उसने सोचा शायद ये उसकी मदद करें और उसे घर तक पहुंचा दें।

अनजान पंछी – क्या हुआ नन्हे पंछी काफी परेशान हो?

नन्हा पंछी – मैं रास्ता भटक गया हूँ और मुझे शाम होने से पहले अपने घर लौटना है। मुझे उड़ान भरना अभी अच्छे से नहीं आता। मेरे घर वाले बहुत परेशान हो रहे होंगे। आप मुझे उड़ान भरना सीखा सकते हैं? मैं काफी देर से कोशिश कर रहा हूँ, पर कामयाबी नहीं मिल पा रही है।

अनजान पंछी हँसते हुए बोला – देखो हम तो उड़ान भरना जानते हैं और अपनी मर्जी से कहीं भी जा सकते हैं। इतना कहकर अनजान पंछी ने उस नन्हे पंछी के सामने पहली उड़ान भरी। वह फिर थोड़ी देर बाद लौटकर आया और दो-चार कड़वी बातें बोल पुनः उड़ गया। ऐसा उसने पांच-छः बार किया और जब इस बार वो उड़ान भर के वापस आया तो नन्हा पंछी वहां नहीं था।

अनजान पंछी अपने मित्र से – नन्हे पंछी ने उड़ान भर ली ना? उस समय अनजान पंछी के चेहरे पर खुशी झलक रही थी।

मित्र पंछी – हाँ नन्हे पंछी ने तो उड़ान भर ली, लेकिन तुम इतना खुश क्यों हो रहे हो मित्र? तुमने तो उसका कितना मज़ाक बनाया।

अनजान पंछी – मित्र तुमने मेरी सिर्फ नकारात्मकता पर ध्यान दिया। लेकिन नन्हा पंछी मेरी नकारात्मकता पर कम और सकारात्मकता पर ज़्यादा ध्यान दे रहा था। इसका मतलब यह है कि उसने मेरे मज़ाक को अनदेखा करते हुए मेरी उड़ान भरने वाली चाल पर ज़्यादा ध्यान दिया और वह उड़ान भरने में सफल हुआ।

मित्र पंछी – जब तुम्हें उसे उड़ान भरना सिखाना ही था तो उसका मज़ाक बनाकर क्यों सिखाया?

अनजान पंछी – मित्र, नन्हा पंछी अपने जीवन की पहली बड़ी उड़ान भर रहा था और मैं उसके लिए अजनबी था। अगर मैं उसको सीधे तरीके से उड़ना सिखाता तो वह पूरी ज़िंदगी मेरे उपकार के नीचे दबा रहता और आगे भी शायद ज़्यादा कोशिश खुद से नहीं करता। मैंने उस पंछी के अंदर छिपी लगन देखी थी। जब मैंने उसको कोशिश करते हुए देखा था, तभी समझ गया था इसे बस थोड़ी-सी दिशा देने की ज़रूरत है और जो मैंने अनजाने में उसे दी और वो अपनी मंज़िल को पाने में कामयाब हुआ। अब वो पूरी ज़िंदगी खुद से कोशिश करेगा और दूसरों से कम मदद मांगेगा। इसी के साथ उसके अंदर आत्मविश्वास भी ज़्यादा बढ़ेगा।

मित्र पंछी ने अनजान पंछी की तारीफ करते हुए बोला तुम बहुत महान हो, जिस तरह से तुमने उस नन्हे पंछी की मदद की, वही सच्ची मदद है।

शिक्षा : पंछियों की इस कहानी से हम इंसानों के लिए भी ये एक सीख है कि हम लोगों की मदद तो करें, पर उसे जताएं नहीं।

चमड़े का जूता

एक बार की बात है एक राजा था। उसका एक बड़ा सा राज्य था। एक दिन उसे देश घूमने का विचार आया और उसने देश भ्रमण की योजना बनाई और घूमने निकल पड़ा। जब वह यात्रा से लौट कर अपने महल आया। उसने अपने मंत्रियों से पैरों में दर्द होने की शिकायत की। राजा का कहना था कि मार्ग में जो कंकड़-पत्थर थे वे मेरे पैरों में चुभ गए और इसके लिए कुछ इंतजाम करना चाहिए।

कुछ देर विचार करने के बाद उसने अपने सैनिकों व मंत्रियों को आदेश दिया कि देश की संपूर्ण सड़कें चमड़े से ढंक दी जाएं। राजा का ऐसा आदेश सुनकर सब सकते में आ गए। लेकिन किसी ने भी बना करने की हिम्मत नहीं दिखाई। यह तो निश्चित ही था कि इस काम के लिए बहुत सारे रुपए की ज़रूरत थी। लेकिन फिर भी किसी ने कुछ नहीं कहा। कुछ देर बाद राजा के एक बुद्धिमान मंत्री ने एक युक्ति निकाली। उसने राजा के पास जाकर डरते हुए कहा कि मैं आपको एक सुझाव देना चाहता हूँ। अगर आप इतने रुपयों को अनावश्यक रूप से बर्बाद न करना चाहें तो एक अच्छी तरकीब मेरे पास है। जिससे आपका काम भी हो जाएगा और अनावश्यक रुपयों की बर्बादी भी बच जाएगी। राजा आश्चर्यचकित था क्योंकि पहली बार किसी ने उसकी आज्ञा न माने की बात कही थी। उसने कहा बताओ क्या सुझाव है? मंत्री ने कहा कि पूरे देश की सड़कों को चमड़े से ढकने की बजाए आप चमड़े के एक टुकड़े का उपयोग करके अपने पैरों को ही क्यों नहीं ढंक लेते। राजा ने अचरज की दृष्टि से मंत्री को देखा और उसके सुझाव को मानते हुए अपने लिए जूता बनवाने का आदेश दे दिया। यह कहानी हमें एक महत्वपूर्ण पाठ सिखाती है कि हमेशा ऐसे हल के बारे में सोचना चाहिए जो ज़्यादा उपयोगी हो। जल्दबाजी में अप्रयोगिक हल सोचना बुद्धिमानी नहीं है। दूसरों के साथ बातचीत से भी अच्छे हल निकाले जा सकते हैं।

शांतिवन। विश्व मधुमेह दिवस पर आयोजित जन जागृति रैली का शुभारंभ करते हुए ब्रह्माकुमारीज़ की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी, महासचिव राजयोगी ब्र.कु. निर्वैर, कार्यकारी सचिव राजयोगी ब्र.कु. मृत्युंजय, राजयोगिनी ब्र.कु. संतोष दीदी, ब्र.कु. हेमलता दीदी, डायबिटोलॉजिस्ट ब्र.कु. डॉ. श्रीमंत साहू तथा अन्य।

अनूप शहर-उ.प्र.। कार्तिक मेला में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए विधायक संजय शर्मा। साथ हैं ब्र.कु. मीना, ब्र.कु. मंजू, ब्र.कु. ललितेश तथा अन्य।

बुधाम्बा-ओडिशा। आध्यात्मिक कार्यक्रम के दौरान विधायक लतिका प्रधान को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. बसंती तथा ब्र.कु. स्मिता। साथ हैं सांसद प्रमिला बिसोई।

रूरा-उ.प्र.। 'विश्वकर्मा जागृति आध्यात्मिक सम्मेलन' के दौरान समूह चित्र में भाजपा नेता रजोल शुक्ला, भाजपा जिलाध्यक्ष राहुल देव अग्निहोत्री, विधायक प्रतिभा शुक्ला, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. प्रीति, समाजसेवी कंचन मिश्रा, महिला जिलामंत्री ब्र.कु. रचना त्रिपाठी, ब्र.कु. किर्ती,मा.आबू, ब्र.कु. मनोज तथा अन्य ब्र.कु. बहनें।

कालांवाली-हरियाणा। सीज़न रिज़ॉर्ट में आयोजित ब्र.कु. रिशु बहन के 'प्रभु समर्पण समारोह' में सम्बोधित करते हुए विधायक शीशपाल जी। मंचासीन हैं सांसद सुनीता दुग्गल, ब्र.कु. कैलाश दीदी,उपक्षेत्रीय निदेशिका,बठिंडा, ब्र.कु. सुदेश दीदी,ब्र.कु. लाज दीदी, ब्र.कु. परमजीत दीदी, ब्र.कु. अरुण, ब्र.कु. बिंदु दीदी, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. संतोष दीदी तथा अन्य।

फिल्लौर-पंजाब। सुल्तानपुर लोदी में गुरुनानक देव जी के 550वें जन्म दिवस पर सरदार सतनाम सिंह जी,मैनेजर,गुरुद्वारा बेर साहब जी तथा कुलविंदर सिंह थियारा,सुपरीन्टेंडेंट ऑफ पुलिस को बधाई देने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. राजकुमारी।

झोझूकलां-कादमा(हरियाणा)। 'विद्यार्थियों में डिप्रेशन के कारण व निवारण' विषय पर सेमिनार के पश्चात् विवेकानंद मेमोरियल पब्लिक स्कूल के प्राचार्य योगेश सांगवान, स्टाफ एवं सदस्यों के साथ ब्र.कु. सुधाकर दवे, ब्र.कु. सुधा, समाजसेवी राजकुमार सांगवान तथा अन्य।

निरसा-झारखण्ड। विश्व मधुमेह दिवस पर सेवाकेन्द्र पर आयोजित 'नि:शुल्क शुगर जाँच शिविर तथा मधुमेह जागरुकता शिविर' का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए डॉ. अवंतिका, डॉ. पी.कुमार, डॉ. डी.बनर्जी, डॉ. आई.एम. सिंह, डॉ. जयंत कुमार तथा अन्य डॉक्टर्स के साथ सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. जया तथा ब्र.कु. शक्ति।

OM - 18 - 2019 BRAHMABABA DELHI FINAL_Page 1 and 2 26/11/2019 12:54 PM Page 10

परमात्मा ने ऐसे गढ़ा आदि देव

ब्र.कु.अनुज,दिल्ली

अगर कोई भगवान है, ईश्वर है, खुदा है, वह कैसा होगा? कल्पनात्मक रूप से तो वो बहुत ही शक्तिशाली होगा। जहाँ पर किसी की भी बुद्धि या दृष्टि या सोच या संकल्प पहुँच नहीं सकते। अच्छा, यदि किसी का थोड़ा बहुत पहुंचता भी हो, तो वह हो सकता है? हो सकता है, हम कह रहे हैं, उसकी अपनी ही कुछ शान्तिमय अवस्था के उच्च विचार हों या फिर बनावटी प्रेरणा भी हो सकती है। क्योंकि आज तक का अनुभव यही कहता है कि जो कोई भी प्रेरणा की बात करता है, उसमें अपने कोई व्यक्तिगत भाव ही होते हैं। **अगर परमात्मा कुछ बताएंगे तो वो कल्याणार्थ ही होगा, उसमें अपना कुछ भी स्वार्थ नहीं होगा। यही सब कल्याणकारी संकल्प व साक्षात्कार परमात्मा ने दादा लेखराज जी को कराए, जिसमें मनुष्यों की दुःखों से मुक्ति, स्वर्ग की स्थापना, मूल्यनिष्ठ समाज आदि पहलू थे, लेकिन यह बातें एक बार में किसी भी साधारण मानव को समझ में आने वाली नहीं थीं, शायद इसीलिए परमात्मा ने उन्हें दिव्य-दृष्टि प्रदान की।** पहले खुद को आत्मा देखने व समझने का अभ्यास ही उन्हें परमात्मा को समझने की तरफ ले गया। कैसा है परमात्मा? क्या संकल्प उसके होते होंगे? एक साधारण मनुष्य कैसे ऐसा सोच सकता है, जब वह अभ्यास करता है? जैसे परमात्मा इस प्रकृति के पांच तत्वों के आकर्षण से परे है, वैसे ही हमें भी उसे समझने के लिए, इस प्रकृति के पांच तत्वों अर्थात् शरीर से डिटैच होने का अभ्यास करना होता है। वही किया दादा लेखराज जी ने और उन्हें भगवान और उनके संकल्प समझ में आने लगे। उन्हें दो साल तो सिर्फ यही स्पष्ट समझने में लग गए कि मुझे हो क्या रहा है? उसका कारण सिर्फ था, इतने सालों तक का प्रकृति, देह, देह के सम्बन्धी, रिश्ते-नातों में फँसना, उलझे रहना। जब थोड़ा इन बातों से निकले तो परमात्मा को समझा, सही रूप से शांति व सुख को समझा। क्या कमी थी दादा लेखराज के पास, सारे वैभव थे, सबकुछ था, लेकिन जिससे(परमात्मा)

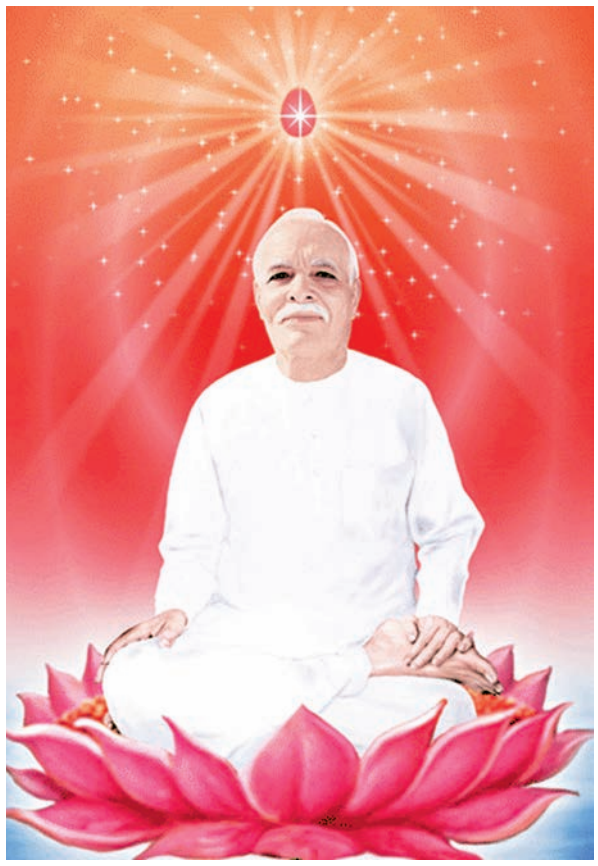

मिला था, अगर वही मिल जाए तो फिर इन भौतिक चीज़ों को छोड़ना आसान हो जाता है। परमात्मा मिला, फिर से उन्हें वह सबकुछ मिला।

सोचने का विषय है, प्रकृति को हम धारण करते हैं अर्थात् शरीर हम आत्माएं लेती हैं, है ना! जब हम प्रकृति को धारण करने वाले हैं, तो कैसी प्रकृति हो हमारी, हम क्या उसका निर्णय नहीं ले सकते! अच्छा यदि खराब प्रकृति हुई है तो हमने ही उसे खराब किया है। क्योंकि हमने प्रकृति को धारण किया। आलम ये है कि मैं आत्मा, आज संकल्पों की गरीबी में जीने लगी। अब आप देखिए कि जब मालिक ही ऐसा हो तो प्रकृति उसी मुताबिक चल पड़ी। और आज उसे नाना प्रकार के रोगों ने घेर लिया। हम अब चाह के भी इस नासूर से पार नहीं पा सकते। कारण, दिन भर संकल्प वैसे ही हैं, सिर्फ नकारात्मक व फालतू के। इस तमोप्रधान प्रकृति को धारण किया, सिर्फ जगाने के लिए परमात्मा शिव ने, आधार लिया दादा लेखराज के वृद्धतन का, नाम दिया प्रजापिता ब्रह्मा। आप सोचिए, जब हम बीमार होते हैं तब हम डॉक्टर की परहेज को मानते हैं क्योंकि हमें ठीक होना है। अर्थात् ठीक ही हम रहते आए हैं। इसलिए जब मानव मन से बीमार हुआ, तब जाकर वह यह बातें समझने की कोशिश करने लगा। आज परमात्मा शिव 84 वर्षों से यह बातें हमें सिखा रहे हैं, सिर्फ अच्छे संकल्प करो, अच्छा सोचो, सबकुछ आप का फिर से अच्छा हो जायेगा। ऐसी एक बार में एक आत्मा ने बात मानी। वो थे परमात्मा के रथ दादा लेखराज(ब्रह्मा बाबा)। वे बन गए सृष्टि के प्रथम मानव आदि देव। और उन्होंने परमात्मा शिव, जगत नियन्ता को ऐसे ही माना जैसे वो हैं, तो उन्हें प्रजा पालक, जगतपिता, प्रजापिता ब्रह्मा का टाइटल मिला। वो प्रजापिता ब्रह्मा, परमात्म-स्वरूप के सेम्पल हमारे सामने बने। उन्हें परमात्मा का निर्देश मिला कि ऐसे ही आपको अपने जैसे सेम्पल देवी देवता के रूप में इस धरा पर तैयार करने हैं और धरा को स्वर्णिम धरा के रूप में निखारना है। और वह कार्य आज बहुत तीव्रता से चल रहा है। इस कार्य को समझने और उससे लाभ लेने के लिए प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के किसी भी सेवाकेन्द्र पर आप जायें और इस बारे में समझें, जानें और लाभ लेकर स्वयं को इस पथ पर चलने के लिए तैयार करें।

उपलब्ध पुस्तकें
जो आपके जीवन को बदल दें

प्रश्न : योग से विकर्म विनाश होते हैं, परन्तु ज्ञान में आने के बाद जो विकर्म होते हैं, वे योग से नष्ट नहीं होते, तो उन्हें नष्ट करने की विधि क्या है?

उत्तर : विकर्म तो योग से ही नष्ट होंगे, ज्ञान से पूर्व के हों या ज्ञान के बाद। परन्तु ज्ञान के बाद विकर्म करने से सौ गुणा दण्ड होने के कारण बुद्धि भारी हो जाती है, इस कारण से योग लगेगा नहीं तो विकर्म विनाश कैसे होंगे। अपने विकर्म लिखकर योग लगाने के समय बाबा के पास भेज दें या बाबा के कमरे में गद्दी के नीचे रख दें। इससे मन हल्का होगा। परन्तु यदि कोई मनुष्य बार-बार गलती करके क्षमा चाहे तो यह सम्भव नहीं होगा। फिर विशेष योग करे तो बोझ हल्का हो जाएगा। विकर्म होने पर ज्ञान ही छोड़ देना बुद्धिमानी नहीं है। इससे तो विकर्म बढ़ते ही जाएंगे। संगमयुग पर दृष्टि से, बोल से, व्यवहार से, विकर्म न हों इसका बहुत ध्यान रखना चाहिए क्योंकि ये विकर्म आत्मा को संगमयुग का सुख नहीं लेने देंगे। जो आत्माएं अपने जीवन से असन्तुष्ट हैं उसका कारण बार-बार होने वाले ये सूक्ष्म पाप हैं।

प्रश्न : मेरा योग अमृतवेले बहुत अच्छा लगता है परन्तु शाम को बिल्कुल नहीं लगता। मैं शाम के योग का महत्व समझता हूँ, मेरी बड़ी दिल होती है, मैं रोज़ बैठता हूँ परंतु परेशान होकर उठ जाता हूँ, इसके समाधान के लिए मैं क्या करूं?

उत्तर : उस समय कोई बुरा प्रभाव आप पर होवी होता है। बुरे समय का प्रभाव अच्छे-अच्छे मनुष्यों को भी विचलित कर देता है। कुछ समय के लिए आप वह समय छोड़कर अन्य कोई समय योग करो और उस समय कोई भी स्वमान 108 बार लिखो। समय के कुप्रभाव को समाप्त करने के लिए विशेष स्वमान का अभ्यास करें कि मैं समय का रचयिता हूँ और मास्टर भाग्यविधाता हूँ। मैं विजयी रत्न हूँ। इससे धीरे-धीरे बुरे समय पर विजय होने लगेगी। योगाभ्यास के लिए कोई प्रतिबंध नहीं है, सारा दिन कभी भी किया जा सकता है।

प्रश्न : मेरे अंतर्मन में गंदगी ही गंदगी भरी नज़र आती है, मैं इसे शुद्ध करना चाहता हूँ तो क्या करूं?

उत्तर : अवचेतन मन खेत की तरह है और हमारे संकल्प बीज हैं। जैसा बीज खेत में डालेंगे वैसी ही फसल मिलेगी। जन्म-जन्म सबने अंतर्मन में गंदगी भरी है, उसमें से पूर्व जन्मों की गंदगी अचेतन मन में चली गई। वहां से नकारात्मक वाइब्रेशन्स निरन्तर आते रहते हैं।

योग बल से अचेतन मन को साफ करना है व स्वमान व श्रेष्ठ संकल्पों से अंतर्मन को। अपने अंतर्मन को श्रेष्ठ विचार देना प्रारंभ करो। सवेरे उठकर पहले10 मिनट श्रेष्ठ संकल्पों में व्यतीत करना चाहिए। उस समय हमारा अंतर्मन जागृत रहता है। श्रेष्ठ विचारों को वह तत्काल ग्रहण कर लेगा और उसकी सफाई होने लगेगी। उठते ही विचार करो, मैं आत्मा इस तन में अवतरित हुई...मैं पद्मापदम भाग्यशाली हूँ...वाह, स्वयं भगवान मेरा भाग्य बना रहे हैं...वह मेरी पालना कर रहे हैं... उसने मुझे कितना प्यार दिया, वह मेरे खुदा दोस्त हैं, मैं तो पवित्रता की देवी या देव हूँ। मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, विजयी रत्न हूँ। इस तरह के विचार श्रेष्ठ स्थिति का निर्माण करेंगे।

मन की बातें
- राजयोगी ब्र.कु. सूर्य

प्रश्न : बाबा कहते हैं कि शक्तिशाली याद में रहकर कर्म करो। शक्तिशाली याद क्या है, कर्म में इसका अभ्यास कैसे करें व इससे विकर्म कैसे विनाश होते हैं?

उत्तर : शक्तिशाली याद अर्थात् बीज रूप अवस्था, बीज रूप अवस्था या बिंदु रूप अवस्था अर्थात् स्वयं को एक संकल्प में स्थित करना और अधिक स्पष्टीकरण के लिए मन शांत स्थिति में आ जाए और बुद्धि परमात्मा स्वरूप पर स्थिर हो जाए। यह अति शक्तिशाली योग की अवस्था है परन्तु इसका अनुभव वही कर सकते हैं जो सारा दिन शांत रहें, अंतर्मुखी रहें व ज्ञान के प्रयोग से विभिन्न परिस्थितियों में भी चित्त को उत्तेजित ना होने दें। साथ-साथ बुद्धि को परमात्म स्वरूप पर स्थिर रखने के लिए बुद्धि को स्वच्छ रखें।

स्वच्छ बुद्धि का अर्थ है बुद्धि में घृणा, ईर्ष्या, बदले की भावना, काम, क्रोध, मैं, मेरा, मान-अपमान ये सब न हो। कर्म करते हुए बुद्धि को परमधाम में शिव बाबा के ज्योति स्वरूप पर स्थिर करें जैसे कि शिव बाबा को देख रहे हैं और हाथों से कर्म करें। परंतु कर्म में बुद्धि भी लगती है, अतः बुद्धि ऊपर भी लगती है व नीचे भी। बुद्धि डबल काम तब कर सकती है, जब पवित्र हो। लगातार नहीं तो कभी ऊपर, कभी नीचे, ऐसे अभ्यास करना चाहिए। साथ में बाबा से किरणें आ रही हैं यह भी अभ्यास करें। ऐसे अभ्यास से सर्वशक्तिवान से शक्तियों की किरणें आत्मा में आती हैं, वह मस्तिष्क में फैल कर्मों की सूक्ष्म तरंगों को नष्ट करती हैं।

प्रश्न : मैं एक डायरेक्ट प्रश्न आपसे पूछता हूँ - क्या आपने भगवान को देखा है?

उत्तर : हम भी डायरेक्ट उत्तर दे रहे हैं हाँ...एक बार नहीं बार-बार और उनसे ऐसा दिव्य नेत्र भी प्राप्त कर लिया है कि जब चाहें उन्हें देख लें और केवल देखा ही नहीं बल्कि उनसे नाता भी जुड़ गया। हम अति समीप हो गये, वो हमारा हो गया। वो हमारा परम मित्र बन गया। यदि आप चाहें तो हम आपका भी उनसे दिव्य मिलन करा सकते हैं।

प्रश्न : आपके पास इतने सन्त आये, उनमें से कितनों ने भगवान को पहचाना...? मुझे तो नहीं लगता कि ऐसा कुछ हुआ है, क्योंकि इन विद्वानों में अहम बहुत होता है।

उत्तर : आबू पावन तीर्थ एक ऐसी दिव्य भूमि है जहां आकर सभी का अहम समाप्त हो जाता है। हमें एक भी संत से ऐसा प्रतीत नहीं हुआ कि उनमें अहम है। यहां हमने सभी को दिव्य व सौम्य स्वरूप में ही देखा। यहां उनके चेहरों पर शान्ति थी, प्रेम था, अपनत्व का भाव था व आंनद था। उनके कानों में ये महावाक्य पड़े कि ये ईश्वरीय कार्य मनुष्यों द्वारा संचालित नहीं है। उन्होंने सुना कि ब्रह्मा बाबा के तन में स्वयं निराकार, ज्ञान सागर, महाज्योति, परमसत्ता, परम आत्मा ने प्रवेश करके ज्ञान दिया था। वही ज्ञान यहां दिया जा रहा है। यह जानकर कि अब भी अवतरण हो रहा है, उनमें से कईयों ने उनका प्रत्यक्ष स्वरूप देखने की सच्ची दिल से इच्छा व्यक्त की।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

मन की खुशी और सच्ची शांति के लिए देखें आपका अपना 'पीस ऑफ माइंड चैनल'

OM - 18 - 2019 BRAHMABABA DELHI FINAL_Page 1 and 2 26/11/2019 12:54 PM Page 11

स्वास्थ्य

पेट दर्द का घरेलू उपचार

दुनिया का कोई व्यक्ति ऐसा नहीं है जिसे कभी पेट दर्द नहीं हुआ हो। इसकी कई वजह हो सकती हैं। गंभीर रूप से पेट दर्द होने पर तुरंत डॉक्टर के पास जाकर अपनी जाँच, परीक्षण और उपचार करना चाहिए। लेकिन कब्ज, एसिडिटी, अपच, अजीर्ण आदि की वजह से होने वाले पेट दर्द में कुछ घरेलू नुस्खे भी आजमाए जा सकते हैं।

कब्ज

1. खाली पेट नियमित रूप से अमरूद का सेवन करें। इससे पाचन संस्थान मजबूत होता है तथा दर्द से निजात मिलती है।
2. सूखे अंजीर को दूध में उबालकर खाने तथा उस दूध को पीने से लाभ होता है।
3. कच्ची गाजर का सेवर करें। यह रेशे प्रधान होती है तथा आँतों की सड़न दूर करके पेट साफ करती है।
4. रात को एक गिलास दूध में एक चम्मच शहद और सवेरे शौच के पूर्व एक गिलास पानी में एक चम्मच शहद मिलाकर लें।

अपच और आफरा

1. अपच की वजह से होने वाले पेट दर्द में अदरक के रस में नींबू का रस मिलाकर लेना हितकर है।
2. भोजन के पश्चात् एक चम्मच आँवले के चूर्ण की फांकी लेने से लाभ होता है। या पुदीने का रस भी ले सकते हैं। यह वायुनाशक है। पेट संबंधी सभी समस्याओं की यह रामबाण दवा है।
3. एक कप संतरे के रस में थोड़ा-सा काला नमक व सौंठ का चूर्ण मिलाकर सेवन करने से भी राहत मिलती है।
4. पपीते को छोटे-छोटे टुकड़े में काटकर उस पर भुना हुआ जीरा, काली मिर्च चूर्ण, सेंधा नमक तथा नींबू डालकर सेवन करने से लाभ होता है।
5. यदि आँतों में दर्द हो, तो प्रतिदिन सुबह-शाम दो-दो लौंग का सेवन करने से राहत मिलती है।
6. अजवाइन, सौंठ व काला नमक को पीसकर चूर्ण बना लें तथा भोजन के पश्चात् लें।
7. एक चम्मच चुकंदर के रस में एक चम्मच नींबू का रस मिलाकर लेना लाभकारी है।
8. एक कप अनार के रस में थोड़ा-सा सेंधा नमक तथा काली मिर्च चूर्ण मिलाकर लेने से पेट दर्द में निजात मिलती है।

गैस

1. एक कप पानी में एक चम्मच नींबू का रस तथा एक चुटकी काला नमक मिलाकर लेने से लाभ होता है।
2. गर्म पानी में थोड़ी सी हींग मिलाकर सेवन करने से पेट दर्द में तुरंत राहत मिलती है।
3. अजवाइन और सौंफ को सममात्रा में लेकर, एक-एक चम्मच सुबह-शाम खाने से पेट दर्द में लाभ होता है।

पेट में कीड़ों की वजह से होने वाले दर्द में बेल के ताजे पत्तों का एक-एक चम्मच रस सुबह-शाम लेने से लाभ होता है। इससे वायु, गैस, आफरा भी दूर होता है।

कोई भी उपचार करने से पूर्व डॉक्टर की सलाह ज़रूर लें।

- डॉ. विनोद गुप्ता

कोयला नगर-कानपुर(उ.प्र.)। नये सेवाकेन्द्र निमार्ण के लिए भूमि पूजन करते हुए राज्यसभा सांसद चौधरी सुखराम सिंह, ब्र.कु. विद्या, ब्र.कु. ज्योति तथा अन्य।

दिल्ली-ववाना। दीपावली के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए विधायक रामचन्द्र जी, एम.एस. डॉ. सागर, ब्र.कु. चंद्रिका तथा अन्य ब्र.कु. बहनें।

अमृतसर-पंजाब। श्री गुरूनानक देव जी के 550वें जन्म दिवस पर स्वर्ण मंदिर में आयोजित 'इंटरफेथ वर्ल्ड पीस कॉन्फ्रेन्स' में सम्बोधित करने के पश्चात् डॉ. ब्र.कु. बिन्नी को सम्मानित करते हुए शिरोमणि गुरूद्वारा कमेटी के अध्यक्ष।

जौनपुर-उ.प्र.। नवदुर्गा चैतन्य झाँकी का अवलोकन करने के पश्चात् दुर्गा पूजा समिति के डायरेक्टर वीरेन्द्र कुमार वागी तथा अध्यक्ष डॉ. अमर नाथ पाण्डे को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.मंजू बहन। साथ हैं शिवांगी बहन तथा अन्य।

भीनमाल-राज.। विश्व यादगार दिवस पर सड़क दुर्घटना में पीड़ितों एवं जान गंवाने वालों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. गीता, ब्र.कु. संध्या, ब्र.कु. अंजली, ब्र.कु. लक्ष्मण, ब्र.कु. दिनेश, ब्र.कु. गणेश तथा अन्य।

बहादुरगढ़-हरियाणा। नवनिर्वाचित विधायक को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. अंजली तथा अन्य ब्र.कु. भाई बहनें।

आगरा-अवधपुरी। नये सेवाकेन्द्र का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. शील दीदी,क्षेत्रीय निदेशिका, ब्र.कु. सरिता, ब्र.कु. अमरचन्द गौतम, ब्र.कु. मधु तथा ब्र.कु. गीता।

दिल्ली-लोधी रोड। दिल्ली मेट्रो रेल अकादमी में कार्यशाला कराने के पश्चात् समूह चित्र में आर.एल. गुप्ता,डीन, महेन्द्र सिंह,प्राचार्य, राजेश राघव,उप प्रचार्य, ब्र.कु. पीयूष, ब्र.कु. दीपिका तथा प्रतिभागी।

जींद-हरियाणा। नवनिर्वाचित विधायक डॉ. कृष्ण मिड्ढा को सेवाकेन्द्र पर ज्ञानचर्चा के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. विजय बहन।

जयापुर-श्री निवास नगर(पीस पैलेस)। चैतन्य देवियों की झाँकी का उद्घाटन करते हुए महापौर विष्णु लाटा,सीताराम अग्रवाल,मंगला सरिया तथा ब्र.कु. हेमा।

नेपाल-गुलरिया। रामलीला कार्यक्रम के अवसर पर अयोध्या के श्री राम प्रवेश पाण्डेय,मानस कोकिल, श्री अखिलेश संत जी के साथ ब्र.कु. गीता तथा अन्य।

तोशाम-हरियाणा। विश्व मधुमेह दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में मधुमेह के प्रति जागरुक करते हुए डॉ. मदन मानव,भिवानी विभाग,आरोग्य भारती। मंचासीन हैं ब्रह्माकुमारीज़ मेडिकल विंग के क्षेत्रीय संयोजक ब्र.कु. डॉ. राम प्रकाश, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. मंजू तथा कमलेश पंघाल।

OM - 18 - 2019 BRAHMABABA DELHI FINAL_Page 1 and 2 26/11/2019 12:54 PM Page 12

विभिन्न संस्थाओं में हुआ कार्यक्रमों का आयोजन

'मेरा भारत स्वर्णिम भारत अभियान' पहुंचा शहर में

ग्वालियर। ब्रह्माकुमारीज़ के युवा प्रभाग का 'अखिल भारतीय प्रदर्शनी बस अभियान - मेरा भारत स्वर्णिम भारत' का ग्वालियर शहर में भव्य स्वागत किया गया। साथ ही एक पैदल शोभा यात्रा का आयोजन हुआ, जिसका शुभारम्भ पूर्व साडा अध्यक्ष राकेश जादौन ने झंडी दिखाकर किया। शोभा यात्रा के चेम्बर ऑफ कॉमर्स पहुंचने पर ग्वालियर शहर के जन साधारण के लिए आयोजित कार्यक्रम में मुख्य रूप से ब्रह्माकुमारी संस्थान के युवा प्रभाग की राष्ट्रीय उपाध्यक्षा ब्र.कु. चन्द्रिका ने युवाओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि अपने अन्दर के हीरो को पहचानिए। उसकी खोज करिए। जिस प्रकार कस्तूरी, मृग के भीतर ही होती है लेकिन वो इस बात से अंजान उसे बाहर ढूंढ़ता है, उसी प्रकार मनुष्य के

मंचासीन हैं ब्र.कु. चन्द्रिका बहन, ब्र.कु. अवधेश दीदी, ब्र.कु. आदर्श बहन, ब्र.कु. निर्मला दीदी व अतिथिगण।

भीतर सारी शक्तियां और खूबियां हैं जिसे पहचानें और उन्हें तराशें। राजयोगिनी ब्र.कु. निर्मला दीदी, रीवा ने कहा कि खुद में वह बदलाव लाएं जो आप दुनिया में देखना चाहते हैं। बदलाव के लिए राजयोग को अपने जीवन का हिस्सा बनायें। राजयोगिनी ब्र.कु. अवधेश दीदी,क्षेत्रीय निदेशिका,भोपाल ने बताया कि वर्तमान समय के अनुसार आज हम सभी को रिलैक्स, रीचार्ज व रेज्युवनेट होने की आवश्यकता है। यात्रा प्रभारी राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी ने बस यात्रा के उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए बताया कि आज हमारे मन पर नकारात्मकता की छाया है, जिसे सकारात्मक सोच के उदय से दूर किया जा सकता है। ब्र.कु. कृति ने कहा कि हमने स्वतंत्रता को अपने अनुकूल रूप से अपनाया है, जिसके कारण हमारे जीवन में नकारात्मक प्रभाव ने घर कर लिया है। उसको सही मायने में अपनाने की ज़रूरत है। अंत में विभिन्न समाज सुधारक संगठन, युवा संगठन आदि के द्वारा ब्र.कु. चन्द्रिका दीदी और ब्र.कु. कृति का सम्मान किया गया। कार्यक्रम का कुशल संचालन ब्र.कु. रेखा ने किया गया तथा ब्र.कु. प्रहलाद ने सभी का आभार व्यक्त किया।

साइलेंट किलर की तरह कार्य करता है डायबिटीज़ - भंडारी

विश्व मधुमेह दिवस पर कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए डॉ. प्रताप मिड्ढा। साथ हैं के.एस. भंडारी, डॉ. श्रीमंत साहू व डॉ. ब्र.कु. बिन्नी बहन।

माउण्ट आबू। विश्व मधुमेह दिवस के उपलक्ष्य में ग्लोबल अस्पताल के ऑडिटोरियम में आयोजित कार्यक्रम में केन्द्रीय रिज़र्व पुलिस बल,आंतरिक सुरक्षा अकादमी निदेशक पुलिस महानिरीक्षक,निदेशक के.एस भंडारी ने कहा कि डायबिटीज़ की बीमारी साइलेंट किलर की तरह कार्य करती है। जो इंसुलिन को असंतुलित कर शरीर को दिन प्रतिदिन खोखला करती जाती है। धीमी गति से स्वास्थ्य को जीर्ण-शीर्ण करने वाली मधुमेह व्याधि से बचाव के लिए जीवनशैली में परिवर्तन लाने की ज़रूरत है। डायबिटीज़ की बीमारी हर आयु वर्ग को अपना शिकार बना रही है। भागदौड़ भरी ज़िंदगी में समय रहते इस पर लगाम लगाने के लिए गंभीर होने की ज़रूरत है। ग्लोबल अस्पताल द्वारा डायबिटीज़ को लेकर किए जा रहे कार्यक्रम हर आयु वर्ग को लाभान्वित कर रहे हैं। ग्लोबल अस्पताल के निदेशक डॉ. प्रताप मिड्ढा ने कहा कि मधुमेह बीमारी से ग्रसित 10 लाख लोग हर वर्ष मौत के मुंह में जा रहे हैं। दिनोंदिन बढ़ते

ग्लोबल अस्पताल में विश्व मधुमेह दिवस को लेकर कार्यक्रम का आयोजन

- **भारत में डायबिटीज़ की वजह से हर बीस सेकण्ड में कटता है पांव**
- **मधुमेह से बचाव के लिए नियमित व्यायाम, संतुलित आहार व भोजन का परहेज**
- **मधुमेह के असर से होता है हृदय रोग**

इस आंकड़े पर लगाम कसने के लिए गंभीरतापूर्वक दिनचर्या व खान-पान में बदलाव लाना चाहिए। कड़ा परिश्रम, नियमित व्यायाम, भोजन का परहेज करने से इस बीमारी से निजात पाना संभव है। मधुमेह विशेषज्ञ डॉ. श्रीमंत साहू ने कहा कि हर बीस सेकण्ड में किसी न किसी डायबिटीज़ के शिकार रोगी के पांव काटे जा रहे हैं। मधुमेह के असर से 80 फीसदी लोगों को हृदय रोग की विकृतियों का भी सामना करना पड़ रहा है। मधुमेह से बचने के लिए कोई भी लापरवाही नहीं बरती जानी चाहिए। देशभर में 'डायबिटीज़ व परिवार' विषय को लेकर चलाए जा रहे कार्यक्रमों में मरीजों को इसका लाभ लेना चाहिए। डॉ. ब्र.कु. बिन्नी सरीन ने कहा कि संतुलित आहार, शारीरिक व्यायाम, सकारात्मक सोच, राजयोग मेडिटेशन का अभ्यास, आसन, प्राणायाम आदि को अपनी दिनचर्या में शामिल करने से मधुमेह से मुक्ति पाई जा सकती है। इस अवसर पर डॉ. श्रीमंत साहू ने प्रेज़ेन्टेशन के माध्यम से डायबिटीज़ से होने वाले नुकसान व उससे बचाव को लेकर विस्तारपूर्वक जानकारी दी। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

बाल दिवस पर शहर में विभिन्न कार्यक्रमों का सफल आयोजन

भिलाई नगर-छ.ग.। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा बाल दिवस पर मैत्रीकुंज, हनुमान मंदिर प्रांगण तथा बोरसी के प्रगति मैदान में बच्चों के लिए पेंटिंग और ऑन स्पॉट स्पीच कम्पीटिशन का कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें सभी बच्चों ने नई सोच, नये विचार के साथ 'रचें अपनी नई दुनिया, सितारे ज़मीन पर' थीम में उमंग-उत्साह से भाग लिया। बोरसी की पार्षद प्रेमलता साहु, भोपाल सिंह,प्रोफेसर,रूंगटा कॉलेज, मनीष राजपूत,डायरेक्टर, एम.आर. ट्यूटोरियल, ब्र.कु. साक्षी और ब्र.कु. इन्द्राणी दीदी ने

दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया तथा मैत्रीकुंज में प्रसिद्ध चित्रकार महेश चतुर्वेदी द्वारा दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ किया गया। ब्र.कु. साक्षी ने कहा कि हम किसी चीज़ की प्रैक्टिस करते हैं तो परफेक्ट हो जाते हैं इसलिए हम जीवन में जो बनना चाहता हैं उसके लिए हमेशा प्रैक्टिस करते रहना चाहिए। साथ ही कहा कि हम जैसा दूसरों के साथ व्यवहार करते हैं वैसा ही सब हमारे साथ करेंगे। हमें किसी भी बात के लिए ज़िद्द या अपने माता-पिता को परेशान नहीं करना चाहिए। भगवान ने सबको एक जैसा दिमाग दिया है पर उसे सही यूज़ करना है। प्रसिद्ध चित्रकार महेश चतुर्वेदी ने बच्चों को पेंटिंग की ट्रिक्स बताते हुए कहा कि हम अपनी कला के माध्यम से दूसरों के जीवन में खुशी ला सकते हैं और विश्वव्यापी समस्याओं को प्रदर्शित कर सकते हैं।

पुष्कर मेले में 'म्हारो भारत-समृद्ध भारत प्रदर्शनी' का भव्य आयोजन

समाज को नई दिशा देने के लिए ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा लगाई गई आध्यात्मिक प्रदर्शनी का अंतर्राष्ट्रीय पुष्कर मेले में हुआ उद्घाटन - प्रदर्शनी को देखने के लिए उमड़ा जन सैलाब

अजमेर-राज.। ब्रह्माकुमारीज़ के वैल्यु एजुकेशन सेंटर नवाब का बेड़ा अजमेर की ओर से पुष्कर मेले में 'म्हारो भारत समृद्ध भारत' आध्यात्मिक प्रदर्शनी के शुभारंभ पर पीसांगन के एस.डी.एम. समुंदर सिंह भाटी ने कहा कि इस पुष्कर मेले में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन ब्रह्माकुमारीज़ का एक अच्छा प्रयास है। जिसमें सरल तरीके से मेले में आने वालों को आध्यात्मिकता के बारे में समझाया जा रहा है। ब्र.कु. वीरेंद्र,माउण्ट आबू ने कहा कि जो कर्म हम करेंगे, हमें देख आने वाली पीढ़ी भी करेगी, इसलिए श्रेष्ठ समाज के निर्माण के लिए जीवन में आध्यात्मिकता को अपनाना चाहिए। इस अवसर पर प्रदर्शनी

का उद्घाटन पीसांगन के एस.डी.एम. समुंदर सिंह भाटी, राजयोगिनी ब्र.कु. शांता दीदी,क्षेत्रीय संयोजिका,समाज सेवा प्रभाग,राजस्थान, ब्र.कु. अंकिता, ब्र.कु. रूपा, ब्र.कु. लता, ब्र.कु. ओम प्रकाश, ब्र.कु. पुरुषोत्तम, माउण्ट आबू से आए ब्र.कु. वीरेंद्र, ब्र.कु. कीर्ति, ब्र.कु. प्रकाश, ब्र.कु. संजय इत्यादि द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया। इस अवसर पर ब्रह्माकुमारीज़ परिवार के अनेक सदस्य उपस्थित रहे। इस प्रदर्शनी में समाज सेवा प्रभाग द्वारा स्वच्छता एवं पर्यावरण, व्यसन मुक्ति, संपूर्ण स्वस्थ जीवन, किसान सशक्तिकरण, राजयोग मेडिटेशन, बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ, कला एवं संस्कृति प्रभाग द्वारा वैल्यू गेम्स को सरल शब्दों में समझाया गया।

विश्व यादगार दिवस पर सड़क दुर्घटना में पीड़ितों के लिए कार्यक्रम

छत्तरपुर-म.प्र.। इस अवसर पर पुलिस अधीक्षक तिलक सिंह ने कहा कि अनुशासन जीवन में अत्यधिक महत्वपूर्ण है और इसका सबसे अच्छा उदाहरण ब्रह्माकुमारी विश्वविद्यालय के भाई-बहनों में देखने को मिलता है। समाज के अन्य वर्गों को इनसे सीख लेते हुए अपनी ज़िम्मेवारी को समझना होगा। उन्होंने कहा कि व्यक्ति को हर काम पुलिस के ऊपर टालना नहीं चाहिए। आप अपने बच्चों को सचेत करें कि वाहन को नियंत्रण में चलाएं और सुरक्षित रहें। सड़क दुर्घटना होने पर फोटो या वीडियो बनाने के बजाए उस व्यक्ति की मदद करना ही सच्ची मानवता है।

सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. शैलजा ने कहा कि संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा नवम्बर माह के तीसरे रविवार को सड़क दुर्घटना में पीड़ितों के प्रति विश्व स्मृति दिवस के रूप में घोषित किया गया है। हम मौन साधना द्वारा शांति, प्रेम एवं सद्भावना के प्रकम्पन का श्रेष्ठ उपहार पीड़ित आत्माओं को दे सकते हैं।

पूर्व विधायक जुझार सिंह बुंदेला व वरिष्ठ पत्रकार सुरेन्द्र अग्रवाल,संपादक,न्यू राष्ट्र भ्रमण ने भी अपने विचार रखे।

ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा सड़क यातायात दुर्घटना पीड़ितों प्रति विश्व स्मृति दिवस पर एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें दुर्घटना पीड़ितों के परिजनों सहित नगर के अनेक गणमान्य नागरिकों ने पीड़ितों को दीप प्रज्वलित कर श्रद्धांजलि अर्पित की।

कार्यक्रम के अंत में ब्र.कु. माधुरी ने योग कॉमेन्ट्री द्वारा पीड़ितों को सकारात्मक संकल्प, शांति और सद्भावना की श्रद्धांजलि दी। मंच का कुशल संचालन ब्र.कु. धीरज ने किया। इस अवसर पर हरि अग्रवाल,संपादक,छत्तरपुर भ्रमण, नीरज सोनी,बयूरो चीफ पत्रिका सहित शहर के गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

RNI NO RAJHN/2000/721, POSTAL REGD. RJ/SIROHI/9623/18-20, Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment RJ/WR/WPP/003/2018-20, Posting on 12TH TO 14TH and 22ND TO 24TH each month, published on 3rd Dec 2019
प्रकाशक एवं संपादक : ब्र.कु. गंगाधर, डी.बी. प्रिंट कॉर्प. जयपुर से मुद्रित एवं ब्रह्माकुमारीज़ के लिए छपवाया। ई.मेल - omshantimedia@bkivv.org
कार्यालय : ओमशान्ति मीडिया, ब्रह्माकुमारीज़,शांतिवन, आबू रोड, (राज.) - 307510